मनुष्य बनो

7,8
76

वा० सू०
५-२५

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

ल फकीर चन्दजी महाराज

नवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१— शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२— सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल,सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी दिया जायगा।

४—किसी धर्म,पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अ लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले, अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

देवीचरन मीतल

सम्पादक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २६ | आषाढ़ सं० २०३३ वि० जौलाई, अगस्त १९७६ | संख्या १०-११

चेतावनी

कोई सुख दुख का नहीं दाता. तेरी है भूल सब ।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब ॥
कर्म की परधानता की, क्या नहीं तुमको समझ ।
कर्म से आनन्द है और, कमं ही से सूल सब ॥
यह जगत है वाटिका, करते हैं प्राणी आके काम ।
कर्म के अनुसार इनके. काटे हैं और फूल सब ॥
जो ठगेगा वह ठगा, जायेगा निस्सन्देह आप ।
प्रेमीजन हो पाते हैं, और प्रेम के बहुमूल सब ॥
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में ।
अपने घर को आप उठाया, करते ही हैं भूल सब ॥
किस भरम में तू पड़ा, औरो की बातें छोड़ दे ।
काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब ॥
राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बच कर रह सदा ।
जो नहीं समझा तो, पढ़ना लिखना होगा धूल सब ॥

सम्पादकीय—

आदरणीय सतसंगी भाइयो,

हमारे पास बाबूजी के स्वर्गवास होने के विषय में अनेकों संवेदना सन्देश सतसंगियों से प्राप्त हुए हैं। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। सतसंगियों ने जो प्रेम व आर्शीवाद हमको भेजा है हम उसके लिये कृतज्ञ हैं।

प्रत्येक को अलग अलग सन्देश भेजना सम्भव नहीं होगा। इसलिये इस पत्रिका द्वारा हम सभी सतसंगियों को आभार प्रगट करते हैं।

इसके अतिरिक्त यह भी सूचित करते हैं कि "मनुष्य बनो" पत्रिका यथा पूर्वक चलती रहेगी। इसमें और अधिक सामिग्री जुटा कर आपकी सेवा में भेजी जायेगी।

यह पत्रिका आपकी सेवा करती रहे इसमें अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर आप तन,मन,धन से महाराज के वचनों का लाभ उठायें यही हमारी कामना है।

भवदीय
प्रभूदयाल

संवेदना सन्देश

स्वर्गीय श्री देवीचरन मीतल जी की स्मृति में परम पूज्य सेठ बद्रीप्रसाद मैसूर वालों के पत्र की कुछ पंक्तियां

बम्बई इन्द्रभवन
मैसूर दि० ५-७-७६

आदरणीय श्री जयन्तीप्रसादजी, जगदीशचन्द्रजी, प्रभूदयालजी, कैलाश जी तथा परिवार के अन्य सदस्य

सादर श्रीमन नारायण।

भाई देवीचरनजी के ब्रह्मलोक जाने की सूचना आज ही पत्र द्वारा प्राप्त हुई। सांसारिक व्यवहार से तो शोक करने की परिपाटी है मगर मुझे तो वास्तव में सन्तोष हुआ, क्योंकि कुछ समय से उनके स्वास्थ्य की खींचातानी चल रही थी। रोग से शरीर जीर्ण होगया था मगर परमदयाल महाराज के आदेश के कारण उनका जीवन मनुष्य मात्र की सेवा में भावना प्रबल होने के कारण उनकी साँस महाराज के आशीर्वाद से चल रही थी। महाराज की आज्ञा उनके लिये वरदान सिद्ध होती थी। महाराज चूँकि सदैव पूर्ण पुरुष हैं उनकी भावना में बल होने के कारण मानवता का प्रचार बाबूजी से कराते थे।

वास्तव में आपके परिवार के लोग बड़े भाग्यशाली हैं आप लोगों को ऐसे पिता का पुत्र होना गौरवशाली है जिन्होंने अपनी अन्तिम सांस तक परमारथ का काम नहीं छोड़ा।

जहां तक मेरी भावना है मैं वर्णन नहीं कर सकता कि मैंने उनसे क्या पाया है। मैं स्वयं इस जीवन में उनके ऋण से उऋण नही हो सकूँगा।

"मनुष्य बनो" मासिक पत्रिका के माध्यम से उन्होंने जन-जन

को क्या क्या नहीं दिया। वास्तव में मेरे लिये उनको भुलाना कठिन है।

मैं उनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है उनकी आत्मा को पूर्ण शान्ति मिलेगी।

इसके अतिरिक्त मेरी यह प्रबल इच्छा है कि 'मनुष्य बनो" मासिक पत्रिका यथा पूर्वक मानवता के प्रचार में लगी रहे महाराज जी की वाणी का सन्देश घर घर में पहुँचता रहे यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

इसके प्रचार के लिये मुझ से जो भी सहयोग आपेक्षित हो उसके लिये मैं सदैव तैयार हूं।

भवदीय
बद्रीप्रसाद

पूजनीय सेठ जी,

"आपकी आज्ञानुसार तथा महाराज जी की इच्छानुसार "मनुष्य बनो" पत्रिका यथा पूर्वक चलती रहेगी तथा बाबूजी की धरोहर को हम अन्तिम क्षण तक निभाते रहेंगे। इसके लिये आपकी छाया हम पर सदैव बनी रहे यही भगवान से प्रार्थना है।

सम्पादक

(२)

परम पूज्य सेठ गँगाधरजी बंगलौर वालों के पत्र की कुछ पंक्तियां परिवार के सदस्यों के नाम स्वर्गीय श्री देवीचरनजी की स्मृति में।

बंगलौर
६-७-७६

अजीज, जयन्तीप्रसाद, जगदीशचन्द्र व प्रभूदयालजी।

सादर श्रीमन नारायण

बाबूजी के स्वर्गवास होने का समाचार आपके पत्र द्वारा प्राप्त हुआ। मेरे पास शब्द नहीं हैं जिनसे मैं उनकी श्रद्धांजलि अर्पित

कर सकूँ। मेरे वह सदैव प्रेरणा के श्रोत रहे। महाराज की कृ
वह अपने जीवन की अन्तिम सांस तक उनकी वाणी का प्रचार
करते रहे। मनुष्य मात्र को सचाई का सन्देश देते रहे।

उन्होंने अपने जीवन में सन्तमत की शिक्षा को स्पष्टरूप से जीवों के कल्याण हेतु वर्णन किया है। आने वाले समय में उनकी यह शिक्षा एक वरदान के रूप में मनुष्य मात्र का कल्याण करेगी इसमें सन्देह नहीं है।

मैं उनको अपनी हार्दिक श्रद्धाँजलि अर्पित करता हूं और परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा को शान्ति देने की प्रार्थना करता हुं।

आप सब लोग उनके बताये मार्ग का अनुसरण करके 'मनुष्य बनो" पत्रिका के माध्यम से जन जन का कल्याण करने में पाछे न रहे।

इसके लिये मेरी सेवायें हर समय आपके लिये खुली हुई हैं।

भवदीय

(३) गंगाधर

श्री पीरेमुँगा दिल्ली के उद्‌गार स्वर्गीय श्री देवीचरनजी की स्मृति में

नई दिल्ली

५-७-७६

अजोज प्रभूदयाल

तुम्हारे पिताजी की सूचना पत्र द्वारा दिनाँक ३-७-७६ को मिली। यह आकस्मिक सूचना से दिल्ली के सतसगी भाइयों को काफी धक्का लगा। दिनांक ४-७-७६ को श्री देवीचरनजी के लिये सतसंग कराया और उनकी आत्मा को शान्ति के लिये दातादयाल से प्रार्थना की।

यद्यपि वह हमारे बीच नहीं रहे मगर उन्होंने जो कार्य महाराज की वाणी को घर घर पहुंचाने का किया है वह हमेशा यादगार बनाये रखेगा।

मालिक से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे।

इसके साथ ही तुम्हारे परिवार के लोग मुझसे जो भी सेवा चाहें वह हमेशा मिलती रहेगी।

मौज मालिक

(४) पीरेमुंगा

श्री नन्दलालजी दिल्ली का सन्देश

नई दिल्ली

दि० ५-७-७६

अजीज जगदीशचन्द्र, प्रभूदयाल

बाबू देवीचरनजी के स्वर्गवास होने की खबर पढ़ कर बहुत अफसोस हुआ। वह महाराज के परम भक्त थे। अपने जीवन में "मनुष्य बनो" पत्रिका के माध्यम से उन्होंने सतसंगियों की अटूट सेवा की है। उनकी यह तपस्या सदैव अमर रहेगी।

हम सभी लोग उनकी आत्मा को शान्ति की प्रार्थना करते हैं और आपके परिवार को दातादयाल से इस क्षति को पूर्ण सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना करते हैं।

मौज मालिक

(५) नन्दलाल

श्री आनन्दराव जी हैदराबाद के पत्र की पंक्तियां

श्री देवीचरनजी के निधन की सूचना पाकर बहुत आश्चर्य हुआ। मगर यह शरीर नश्वर है। संसार में एक दिन सभी को जाना है यह प्रकृति का नियम है इसमें शोक व दुखी नहीं होना चाहिये। जो आया वह जायेगा मगर बाबू देवीचरन जी ने अपने

जीवन में जो कार्य किया है उससे वह अमर हैं। उनका किया कार्य सतसंगियों को उनकी हमेशा याद दिलाता रहेगा।

मेरा हैदराबाद के सतसंगियों का आप सब लोगों को हमेशा आशीवाद रहेगा और उनकी आत्मा को शांति मिले इसके लिये उनका कार्य बदस्तूर चलता रहे यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आनन्दराव

निवेदन

आदरणीय सतसंगी गण तथा पाठक वृन्द !

लगभग दो वर्ष से पिताजी श्री देवीचरन मीतलजी की अवस्था कमजोर चल रही थी। वैसे तो फरवरी १९६६ में ही स्थिति नाजुक होगई थी मगर महाराज की कृपा तथा नन्दू भाईजी का आशीवाद तथा अनेक शुभचिन्तकों व सतसंगियों की प्रार्थना से उनको लगभग दस वर्ष की आयु और मिल गई थी।

स्वयं महाराज जी ने हर पत्र में यही कहा कि ऐ देवीचरन तुझसे मुझको अभी बहुत काम लेना है। संसार में अज्ञान को मिटाने के लिये प्रयत्न करना है। यही भावना उनके अन्तर में प्रेरणा का कार्य करती थी।

शरीर अस्वस्थ होते हुए भी निरन्तर मस्तिष्क से महाराज की वाणी को लेखनी में बदल कर जन जन को पहुँचाते रहे। अन्त समय तक रुग्ण अवस्था में भी महाराज की निधी "मनुष्य बनो" का चिन्तन उनके दिल से नहीं गया।

पिछली जनवरी ७६ से उनको यह आभास होगया था कि यह पार्थिक शरीर अब अधिक नहीं चल सकेगा। उनके मन की चिन्ता थी "मनुष्य बनो" मासिक पत्रिका महाराज की वाणी का प्रचार उनके पश्चात कहीं समाप्त न हो जाय।

मुझको पूछा कि "मनुष्य बनो" महाराज की निद्धी का संचालन क्या तुम कर सकोगे। मैं संकोच मैं था कि क्या मैं इस योग्य हूं जो सन्तों व फकीरों के कार्य को निभा सकूँगा। सहमति तो मैंने देदी मगर मन में विचार बना रहा कि मैं तो महा अधम हूं। सांसारिक व्यक्ति हूं। सतसंग तो सुनता हूं मगर अमली जीवन अभी बहुत दूर है। क्या मैं दाता दयाल का सन्देश घर घर में प्रचारित कर सकूँगा।

मगर जब दाता दयाल ने भी आज्ञा दी कि प्रभूदयाल "मनुष्य बनो" पत्रिका बन्द न होने देना तब मुझे यह आदेश शिरोधार्य करना पड़ा।

मैं तो अत्यन्त अनुभव हीन अधम साँसारिक व्यक्ति हूं मगर अब चरण पकड़ पकड़ लिये हैं दाता दयाल के और जो भी अच्छा या बुरा लिख सकूँगा वह होगा केवल दाता की दया से।

मेरा क्या बिगड़ेगा नाथ, जायेगी लाज तुम्हारी।

प्रभूदयाल

धन्यवाद

भाई फिरन्ता सेंदरे रायपुर ने "मनुष्य बनो" की सहायतार्थ २५ रुपया भेजे हैं। हमारी हार्दिक भावना है कि मालिक उनका कल्याण करे एवं इसी प्रकार की सेवा भावना बनाये रखें।

प्रकाशक

क्षमा याचना

पूज्य पिताजी के निधन के कारण हम आपकी सेवा समय से न कर सके अतः हम ग्राहक भाइयों से क्षमा याचना करते हैं।

प्रकाशक

पूज्य पिताजी की सेवा में

(लेखक प्रभूदयाल मीतल)

(स्वर्गीय श्री देवीचरन मीतल)

जन्म २१-६-१९०२ ग्राम खंडेहा
जिला—अलीगढ़
निर्वाण २९-६-७६ शिव भवन

लेखराज नगर अलीगढ़।

श्री देवीचरन मीतलजी का अन्म जिला अलीगढ़ की तहसील खैर के एक गांव खंडेहा में, अग्रवाल वंश के सम्पन्न परिवार में दिनांक २१-६-१९०२ को हुआ था। आपके पिता का नाम ला० स्वरूपलाल था तथा माताजी का नाम श्रीमती रेवतीदेवी था। आपके पिताजी ग्राम खंडेहा हीं में वाणिज्य व्यवसाय तथा काश्त का कार्य करते थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम खंडेहा ही के एक प्राइमरी स्कूल में हुई। उसके पश्चात आपने N.R.S.C. खुर्जा से सन १९२० में हाईस्कूल की परीक्षा प्राप्त की, सन १९२१ में आपने लश्कर (ग्वालियर) में महाराजा ग्वालियर के यहां पर सर्विस शुरू की और लगभग दो साल की सर्विस के पश्चात अपनी माताजी की अस्वस्थता के कारण अलीगढ़ आकर मुख्त्यारी की परीक्षा पास करके वकालत शुरू करदी और लगभग ४५ वर्ष अलीगढ़ कचहरी में ही वकालत करते रहे।

सन १९२५ ई० में आप हुजूर महाराज शिवव्रतलाल जी के सम्पर्क में आये और अपना जीवन आध्यात्मवाद की ओर मोड़ दिया। वकालत के कार्य से समय निकाल कर आप सन्तों और महात्माओं के प्रवचनों का सकलन करने में लग गये। सर्व प्रथम आपने हुजूर महाराज के आदेशों पर "सुमेरु पर्वत" मासिक पत्रिका तथा "महारामायण" का सम्पादन किया जो उस समय के अत्यन्त ही लोक प्रिय आध्यात्मिक पत्रिका थी। "महारामायण" ग्रन्थ जिसमें मनुष्य जीवन को "राम चरित मानस" को आधार मानकर आध्यात्मिक सुलभ मार्ग प्रदर्शित किया है आपके युग में यह अत्यन्त ही गूढ़ रहस्य से भरा वेदान्त है।

सन १९४७ से आप हुजूर दाता दयाल परम सन्त पंडित फकीर चन्दजी के सम्पर्क में आये और जीवन भर उनको अपना इष्ट मानकर उनकी पूजा करते तथा उनकी वाणी को अपनी लेखनी देकर युग प्रवर्तक का कार्य करते रहे। स्वयं गृहस्थ होते हुए तथा सांसारिक बन्धनों में जकड़े रहते हुए भी महाराज के वचनों का पालन करते हुए "मनुष्य बनो" के माध्यम से सन्तों की वाणी का सन्देश घर-घर पहुँचाते रहे।

कुछ समय से उनको पिशाव की तकलीफ चल रही थी आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग कमजोर होने के कारण यह हमेशा करते रहते थे मगर ८ जून १९७६ से सभी दवाओं ने अपना प्रभाव कम कर दिया और अन्त में डाक्टरों ने उनका आपरेशन करने के लिये मजबूर कर दिया। १९ जून १९७६ को उनका आपरेशन पिशाव नली द्वारा निकालने का हुआ मगर विधाता को कुछ और ही मंजूर था वह इस कष्ट को सहन न कर सके।

वह लगभग दस दिन तक जीवन व मृत्यु से टक्कर लेते रहे। कभी शारीरिक अवस्था कष्ट से उभर जाती थी तो कभी फिर गिर

जाती इस जीवन मरण के घोर संग्राम में उनकी नजर उनके स लगे महाराज जी के फोटो पर टिकी रहती थी। और २६ जून १९७६ की सायं ६ बजे से महाराज के अन्तिम दर्शन करके उनकी आंखें बन्द होगई तथा शरीर निर्जीव होगया। मगर उनके पार्थिव शरीर में इस महान कष्ट को पाने के लिये उनकी साँस चलती रही।

२९-६-७६ को लगभग १२ बज कर ४३ मिनट पर उनको अन्तिम हुचकी आई और उनकी आत्मा इस पार्थिव शरीर को त्याग उस परम पिता परमेश्वर के घर में हमेशा के लिये विश्राम करने चली गई।

अपना सादा जीवन, सन्तों की सेवा, गुरु के वचनों का पालन, अल्प आहार तथा इष्ट का पूजन, उनका जीवन भर उद्देश्य रहा और अन्त में समस्त परिवार को यही उपदेश देकर गुरु के धाम में विलीन होगये।

वह अपने पीछे परिवार में तीन भाई दो बहन थे और यह सब में बड़े थे। अपने पीछे पांच पुत्र तथा ४ पुत्रियां अपने परिवार में छोड़ गये हैं। दाता दयाल की छाया में परिवार के सभी सदस्य यथा योग्य स्थिति में हैं और महाराज की दी हुई धरोहर का सुचारु रूप से चलाने में समर्थ हैं।

———

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज

होशियारपुर ३१-३-१९७६

गुरु चरनन चित धार री, मेरी प्यारी सुरतिया ॥
अपने स्वारथ बश लिपटाने, कुल कुटुम्ब परिवार री ॥ मेरी प्यारी
एक में सुख और अनेक में दुख है, टेक एक की धार री ॥ प्यारी
कर्म की गठरी को हलकी करले, राख न सिर पर भार री ॥ प्यारी
एक आस विश्वास गुरू का, भक्ति ज्ञान का सार री ॥ मेरी प्यारी
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, होजा द्वन्द के पार री ॥ मेरीप्यारी

सतगुरु तेरी रे अटरिया, देवला झिलमिल झिलमिल होय ।
ऊँची अटरिया चन्दन कोड़या रही नैनन में जोय ॥
पहुंचेगा कोई सन्त विवेकी, कुटिल मुक्ति जिन खोय ।
चांद सूर्य दो मार्ग कहिये, रहे गगन में सोय ॥
भृकुटि मध्य में जपो सुमिरनी, पवन सूत में पोय ।
गगन नगर जे धरनि न लरजे, बादल बूँद न होय ॥
आठ पहर जहँ अमृत वर्षा पीकर हंस अघोये ।
कहत कबीर सुनो भाई साधू, गुरु से मिल सब कोय ।
जो सतगुरु का दर्शन पाये, जन्म मरन न होय ॥

राधास्वामी !

ये शब्द सुने । वह सतगुरु कौन है जिसकी अटरिया में रोशनी होती है । क्या वह बाबा फकीर, महर्षिजी महाराज, हुजूर बाबा चरणसिंह जी महाराज या हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज हैं ? नहीं । उस सत्गुरु का पता मुझे तुम लोगों से लगा । वह सत्गुरु तुम्हारी खोपड़ी में रहता है और रोशनी वहां होती है । सत्गुरु के

के चरण हैं प्रकाश। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक में लिखा है—

गुरु चरनन चित धार री, मेरी प्यारी सुरतिया।

मैं हुजूर दाता दयालजी महाराज के चरणों को ही धारा करता था। मुझे अपना जीवन याद आता है। मैं उनकी खड़ाऊँ को लेगया था और आठ-दस साल उनको पूजता रहा। मेरे विवाह के अवसर पर वह खड़ाऊँ मेरे सिर पर लटकती रहती थीं और विवाह में वेदी के समय भी मैंने उन खड़ामुओं की पूजा की। आप लोग मुझे पूजते हैं। मुझे मत्थे टेकते हैं। क्या मेरे पांव धोने से उनको कुछ मिल जाता है? उनको एक कल्पित क्षणिक आनन्द मिलता है। हुजूर महाराज ने अपनी प्रेम बाणी में फरमाया है कि सतगुरु कौन? सतगुरु शब्द स्वरूपी और राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरण प्रकाश हैं। गायत्री मन्त्र में भी सावित्री अर्थात प्रकाश को प्रकट करने की आज्ञा है और मुसलमानों में भी नूर का वर्णन है। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा और हुजूर दाता दयालजी महाराज की आज्ञा थी कि शिक्षा को बदल जाना। इसलिये अपने कर्मभोगवश मैंने जो अनुभव किया वह कहता रहता हूं—

अपने स्वारथवश लिपटाने, 'कुल कुटम्ब परिवार री ॥ मेरी प्यारी सुरतिया" ॥ संसार में सब स्वार्थी हैं। गुरु लोग भी अपने स्वार्थ के लिये नाम देते है, कोई अपने डेरे के लिए नाम देते हैं, कोई अपने चेलों की संख्या बढ़ाने के लिए नाम देता है, कोई अपने मन्दिर के लिये और कोई मान प्रतिष्ठा और धन के लिये नाम देता है। आप कहीं भी चले जाओ, कोई सच्ची बात नहीं बताता। सब अपने डेरे धाम या मन्दिर के साथ लोगों को बांधते हैं या अपने धर्म और पंथ में फँसाते हैं और सब स्वार्थी हैं। अपने आपसे

पूछता हूं कि फकीर ! तुम क्या कर रहे हो ? मैं जो कुछ कर रहा हूं, यह मेरा कर्म भोग है। मेरे लिये यह सन्तमत एक समस्या थी। क्यों ? उन्होंने सब का खण्डन किया कि कोई भी आगे नहीं गया और सबको अधूरा बताया। बुद्ध, जैन, सूफी और वेदान्ती सबको अधूरा बताया। मैंने सारा जीवन इस खबत में व्यतीत किया जो कुछ मुझे मिला वही कबीर साहिब को मिला, वही राधास्वामी दयाल को मिला और वही हुजूर महाराज जी को मिला।

सतगुरु तेरी रे अटरिया देवला झिलमिल झिलमिल होय।

क्या मानवता मन्दिर या दूसरे डेरों में जहाँ गुरु रहते हैं झिलमिल होती है ? ऐ जनूनी संसार वालो और पंथ वालो ! क्यों लुटे जा रहे हो, तुमको मूर्ख बनाया जा रहा है। गुरमत तो बिलकुल ठीक है मगर इसकी सच्चई को कोई वर्णन नहीं करता। गुरु नाम है ज्ञान और अनुभव का। अपने अन्तर चलो तब सतगुरु मिलेगा। मुझे या किसी और गुरु को मत्थे टेकने से सिवाय मन के आनन्द के और कुछ नहीं मिलेगा।

ऊँची अटरिया चन्दन कोड़या रही नैनन में जोय।
पहुंचेगा कोई सन्त विवेकी कुटिल कुमाल जिन खोय॥

कुटिल कुमति क्या है ? बे अकली गन्दे विचार दूर होंगे। मेरी या किसी और गुरु की पूजा करने से मन के गन्दे विचार दूर नहीं होंगे। यह practical life है। जब तक अन्तर में प्रकाश नहीं आता कुटिल कुमति नहीं जाती। मैं बूढ़ा होगया हूं। अभ्यासी हूं जब मन में आता हूं तो मेरे अन्तर भी अनावश्यक विचार आजाते हैं जिनको मैं नहीं चाहता मगर वे आते हैं। फिर मैं उनको ज्ञान की दृष्टि से काटता हूं। तो फिर सुख कहां है ? तुम्हारे ही अन्तर में है।

चांद सूर्य दो मारग कहिये रहे गगन में सोहे।
भृकुटि मध्य जपो सुमिरनी पवन सूत में पोये॥

इंगला, पिंगला, चांद और सूर्य हैं ' इनके बीच में से ऊपर को मार्ग जाता है। आगे है गुरु, और गुरु का दरबार। बाहर के गुरु ने मार्ग बताना है कि सच्चा गुरु कहां है। संसार लड़ता-लड़ता मर गया कोई कहता है कि गुरु व्यास में है और कोई कहता है कि गुरु आगरे में है। ससार पागल होगया। गुरु तो तुम्हारे अन्तर में शब्द है और उसके चरण प्रकाश हैं। अपने अन्तर में साधन करो, अन्तर में गुरु मिलेगा बाहर कुछ नहीं हैं।

गगन न गरजे धरती न लरजे बादल बूँद न होंय।
आठ पहर जहाँ अमृत वर्षा, पीकर हंस अघोहें॥

जब सुरत प्रकाश में चली जाती है तो फिर वहाँ पृथ्वी तल नहीं होता। वह है हमारा देश। अमृत वर्षा का तो कबीर साहिब को पता होगा। मैं यह समझता हूं कि अमृत है खुशी आनन्द और मस्ती। यदि और कोई अमृत होता है तो वह सन्तों को पता होगा और या जब अभ्यासी अधिक अभ्यास करता है तो ऊपर से उसके नाक के रास्ता से पानी गिरता है शायद वह अमृत हो लेकिन यदि वह अमृत हो तो मैं तो वह पानी प्रतिदिन पीता हूं मुझे बीमार नहीं होना चाहिये। इसीलिये मैं यह समझता हूं कि मस्ती ही अमृत है। यदि स्वामी जी महाराज या कबीर साहिब पीते थे तो वह बीमार क्यों हुए। या तो उन्होंने अभ्यास नहीं किया और या वह अमृत नहीं है।

कहत कबीर सुनों भाई साधू, गुरु से मिले सब कोय।
जो सतगुरु का दर्शन पाये, जन्म मरन नहीं होय।

गुरु कहां रहता है? यह मैं अपने आपसे पूछता हूं और अपने आप से ही कह रहा हूं। मैं सचाई का खोजी हूं। मैंने क्या लेना इस गुरुआई से? यदि परदा रखता तो लाखों का मालिक होता

मगर मैं इस काम के लिए नहीं आया। मैं देखना चाहता था कि इनके पास क्या अधिकार हैं जो इन्होंने सबका खण्डन किया है अनुभव ने सिद्ध किया है कि इनके पास वह चीज है जो मानव self के को बन्धनों से आजाद कर देती है मगर आजाद होना कौन चाहता है? संसार वालों को तो संसार चाहिये, कोई मान प्रतिष्ठा चाहता है, कोई धन चाहता है और कोई पुत्र चाहता है। इसलिए सन्तमत साधारण लोगों के लिए नहीं है। सन्तमत तो संसार को यह बताने के लिए आया है कि ऐ मानव! तू अज्ञान में आकर धर्म के नाम पर एक दूसरे से झगड़ा करता है। यह तेरी भूल है। सब कुछ तेरे अन्तर है बाहर से कोई नहीं आता। जैसा तेरा ख्याल है वैसा तेरा हाल है, जैसी तेरी मती है वैसी तेरी गति है। जिन लोगों को अन्तर में हुजूर बाबा सावनसिह जी महाराज के, बाबे फकीर के, राम या कृष्ण के, किसी देवी देवता के या किसी और गुरु के दर्शन होते हैं और वह उस रूप को सतगुरु समझते है, वे भूल में हैं। मैं इस बात को नहीं मानता क्योंकि जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, मरते समय लोगों को ले जाता है, लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। यदि मैं ही ज ता होता तो मुझे पता होना चाहिए कि अमुक आदमी मर गया है। यह सब धोखा है और पाखण्ड है।

एक बार मेरे पास एक आदमी आया और दो सेर खांड लाया। मैंने कहा भई! तू गरीब आदमी है यह खांड क्यों लाया है? वह कहने लगा कि बाबा जी! मेरे पास है नहीं अन्य था बहुत कुछ देता। मैंने कहा क्या बात है? उसने कहा कि जब हुजूर बाबा सावनसिंह जी चोला छोड़ गये तो ब्यास में बाबा जगतसिंह गुरु बने लेकिन सन्त कृपालसिंहजी ने कहा कि मैं गुरु हूं। वह आदमी कहता है कि मैं शशोपंज में पड़ गया कि अब कैसे पता लगे कि असल में गुरु कौन है। दो नौजवान लड़कों ने कहा कि हम आपको

पता कर देंगे। पांच सात मिलकर व्यास गये और बाबा जगत जी महाराज से एक लड़के ने रोकर कहा कि बाबाजी। मेरा बाप मर गया है (यद्यपि वह मरा नहीं था) अन्त समय कोई गुरु भी उसको लेने नहीं आया। क्या आपने उसकी रूह को सम्भाल लिया है ? उन्होंने कहा कि हां सतगुरु ने उसको सम्भाल लिया है। उसका बाप तो मरा नहीं था इसलिये लोगों के लिये तो मखौल बन गया लेकिन वह आदमी कहता है कि मैं दुविधा में पड़ गया। सन्त कृपालसिंहजी महाराज के पास गया, स्वामीबाग गया, दयालबाग गया, जगह जगह गया मगर मेरी दुविधा दूर न हुई। किसी ने आपके बारे में बताया। आपका सत्संग सुना। मेरी सन्तुष्टी होगई और बात समझ में आगई और मेरे भ्रम चले गये। यह है सचाई जो मैं समय के सन्त सतगुरु के रूप में कह रहा हूं कि ऐ भोले भाले मानव ! बात को समझ गुरु बाहर नहीं। वह तो तेरे ही अन्तर में है। मैं यह मानता हूं कि अन्त समय गुरु ले जाता है मगर कौन गुरु और कैसे ले जाता है ? सुनो। यदि अन्त समय पर कोई रूप सामने आगया तो तुमको दोबारा जन्म लेना पड़ेगा चाहे वह रूप किसी गुरु का है, राम या कृष्ण का है लेकिन अन्त समय पर शब्द आगया तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। क्योंकि शब्द गुरु है। इसलिए कहा जाता है कि अन्त समय गुरु ले जाता है। यह नहीं कि कोई देह धारी गुरु ले जाता है। एक गुरु के चोला छोड़ जाने के बाद उसके चेले उस गद्दी पर अधिकार जमाने के लिये सिर मारना आरम्भ कर देते हैं कि हममें धार आगई। यह सब धोखा है।

ऐसे ही जगाधरी के एक आदमी ने यद्यपि उसका बाप जीवित था अपने गुरु से कहा कि मेरा बाप मर गया है क्या आपने उसकी रूह को सम्भाल लिया है ? उत्तर मिला कि हां सम्भाल लिया है तो वह आदमी कहने लगा कि मेरा बाप तो जीवित है। आपने

उसकी रूह कैसे सम्भाली। गुरु जी ने फरमाया कि ऐसा कहने का दस्तूर है।

इसलिये मैं कहता हूं कि अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को प्रगट करो। मगर जब तक तुम्हारा मन निर्मल नहीं है प्रकाश और शब्द नहीं आयेगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है। जब तक सांसारिक आशाओं में फँसे हुए हो मन का निर्मल होना महा कठिन है। मैं सुनाम स्टेशन पर था वहाँ से मैंने हुजूर दाता दयालजी महाराज को लिखा कि आपने तो मुझे फकीर बनाया है लेकिन मुझ में सैकड़ों अवगुण हैं मैं फकीर कैसे बनूँगा। उन्होंने लिखा कि जिसने तुमको फकीर बनाया है वह फकीर बना के ही छोड़ेगा। तुम में अभी साँसारिक इच्छायें हैं।

सन्तमत के साधारण लोग अधिकारी नहीं हैं। साधारण संसार के लिए वेद मार्ग है "शिव संकल्प अस्तु' जहाँ तक हो सके सांसरिक इच्छाओं को कम करो। किसी का भला कर जाओ। अपना, अपने परिवार का और दूसरों का भला चाहो। कर्म की जुगात से निकलना बहुत कठिन काम है। इसलिये चले चलो कभी न कभी समय आजायेगा।

सतगुरु शरन गहो मेरे प्यारे, कर्म जुगात चुकाय।

सत्गुरु, अर्थात सतज्ञान प्राप्त करने से कर्म की जुगात पूरी होती है और दूसरी यह है कि—

जिस पर दया आद करता की सो यह नहमत पाये।

यदि हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम करने की आज्ञा न दी होती और हुजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने यह न फरमाया होता कि फकीर ! निर्भय होके काम कर जाओ मैं तुम्हारा रक्षक रहूंगा तो मैं कभी यह काम न करता। अब क्योंकि मेरे सिर पर गुरु ऋण है। इसलिये मैं यह काम करता हूं और सचाई बताता हूं

सुनो। सेवा करोगे किसी की तो तुमको भी मिलेगा। मैंने की मेरी होती है। मैंने दिया हुआ है मुझे मिलता है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि तुम बाबे फकीर को दस हजार रुपया दे दो। मानवता मन्दिर बना दो या किसी दूसरे गुरु का डेरा बना दो तुम सतलोक पहुंच जाओगे। यह बिल्कुल गलत बात है। जो दोगे वही मिलेगा। अब पण्डित नारायणदास इत्यादि ने रुपया दिया है वैशाखी के लिये। लेना देना संसार का व्यवहार है मगर रुपया देने से जन्म मरण समाप्त नहीं होगा। यदि रुपया देने से आवागमन समाप्त हो सकता होता तो ये बड़े-बड़े अमीर सब पार हो जाते। अपने हृदय को शुद्ध करने से सांसारिक आशाओं को छोड़ने से और अन्तर में अभ्यास करने से बेड़ा पार होता है। समझ गये हरवंशलाल ! सत्संगी बन गये मगर घर के झगड़ों में फँसे हुए हो। मैं मानता हूं कि बाहर के गुरु को छोड़ना बहुत कठिन है लेकिन उसको पूर्ण मानो तब तुम्हारा कल्याण होगा अन्यथा नहीं। कबीर साहिब ने कहा है—

गुरु को मानुष जानते, वे नर कहिये अन्ध।
दुखी होंयें संसार में, आगे जम का फन्द ॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहीं।
कहै कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाई ॥

आप लोग आजाते हैं। मेरे सिर पर भी कोई जिम्मेदारी है। मेरा हृदय बिलकुल साफ है। हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज ने मुझे फरमाया था कि 'फकीर ! डेरे के कारण मुझसे सच नहीं कहा गया और दूसरे जीव भी अधिकारी नहीं हैं। तुम निर्भय होके काम कर जाओ मैं तुम्हारा रक्षक रहूंगा। क्योंकि मैं सच्चा आदमी हूं इसलिए मेरे संस्कार तुम लोगों पर अवश्य पड़ेंगे और अदृश्य प्रभाव करेंगे। यदि तुम लोगों को मेरी शिक्षा तुम्हारे अन्त समय में याद

रहेगी या जो शकल भी उस समय तुम्हारे सामने आयेगी तुम उसको माया समझ कर काट दोगे। फिर कहाँ जाओगे ? प्रकाश और शब्द में और बेड़ा पार होजायेगा तुम Light and Sound में चले जाओगे।

सार वचन में माया सम्बाद में लिखा है कि माया ने स्वामीजी से कहा कि महाराज आपने यह मार्ग बहुत आसान कर दिया है तो स्वामी जी ने फरमाया कि सुन माया ! मेरे जीव को तू नहीं ले जा सकती। मेरा जीव सीधा सतलोक में जायेगा।

अब तुमने मुझसे सचाई सुनली। यदि यह मेरी बात तुमको तुम्हारे अन्त समय पर याद रही तो अन्त समय पर जब फिल्म चलेगी तो जहां और बिचार उस समय तुम्हारे सामने आयेंगे तो मेरा यह ज्ञान भी सामने आजायेगा और तुम उन विचारों को माया समझ कर आगे निकल जाओगे। इसलिये मैं कहा करता हूं कि जो आदमी ज्ञान की दृष्टि से मेरा सतसंग सुनते हैं, वे आगे निकल जायेंगे। मैं गारन्टी देता हूं मगर "मैं" का भाव फकीरचन्द नही है। इस मैं का अर्थ ज्ञान है।

निवेदन

जिन प्रेमी भाइयों ने अपना चन्दा अभी तक नहीं भेजा हो वह पत्र प्राप्ती के बाद शीघ्र ही अपना वार्षिक चन्दा भेजदें ताकि पत्र आपकी सेवा करता रहे।

नकल पत्र दिनांक ८ जून १९७६ जो कि हु
परमदयाल जी महाराज ने विरजीनिया
(Virginia) अमेरिका से लिखीं ।

प्यारे प्यारे भक्त जी, मेरी पहुंचे आपको राधास्वामी ।
जिन्दगी गुजर रही है मेरी, बनके अकामी और निष्कामी ।
मौज लाई थी चोले फकीर में, रवाहश थी मिले अनामी ।
दाता की है दया मुझ पर, दिया काम था करने को ।
इस काम से मिट गये भरम, मेरे और पाया देश दवामो ।
दो दिन बाद दाना पानी California लिए जा रहा है ।
क्यों ? पता नहीं ।

जिन्दगी गुजर रही है मौज पर और मौज का है आसरा ।
क्या कहूं मैं, क्या हूं करता, यह नहीं मैं जानता ।

एक समाचार पत्र का Cutting और एक पत्र जो एक व्यक्ति ने The Seerat of Secrets नामी किताब पढ़कर लिखा है । भेज रहा हूं । इनको जो चाहो करो । यदि इनका अनुवाद मानव मन्दिर में भेज सको तो भेज देना या अंग्रेजी में ही प्रकाशित करा देना । साथ ही D.D. Kapila साहिब और प्रौफेसर भगतराम साहिब को यह पत्र दिखा देना । यह उनकी दया और परिश्रम का फल है । Credit उनको जाना चाहिए मुझे नहीं ।

यहां पर खर्च बहुत हो रहा है । लेकिन मेरा नहीं जो कुछ बाहर से आता है वह लंगर और किराया आदि पर खर्च हो रहा है । १९७७ में अमेरिका में Whole World Religions Con-

ference होने का निश्चय हुआ है। डाक्टर I. C. Sharma भी उसके Director होंगे। इसलिये अगले साल फिर अमेरिका आऊँगा। अब मैं एक पत्र California से लिखूँगा और 27-6-76 को न्यूयार्क से दिल्ली आजाऊँगा।

भक्तजी और सत्संगियो ! मैं खुश हूं कि हुजूर दातादयालजी महाराज का ऋण था कि 'शिक्षा को बदल जाना फकीर" बदल चला। पता नहीं ठीक किया या गलत किया। परदा रखता तो मन्दिर जरा ज्यादा पैसे वाला हो जाता। अब मौज है मेरी सेहत ठीक है।

My male mammy (Dr. paras Ram) is quite healthy. She cocks for me and feeds me like a mother to child

अमेरिका के एक दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित हुजूर परम दयालजी महाराज के जीवन और उनकी शिक्षा पर एक झलक।

Faqir Dayal :

What They See Is an Illusion

The Virginian-pilot

TIDEWATER LIVING

A 6 Monday, June 7.1976

By CAMMY SESSA

Virginian pilot Staff writer

VIRGINIA BEACh :—Faqir Dayal, 90, is a little man barely 5 feet tall but he carries a big name and a heavy responsibility.

Known as "His Holiness, Param Sant Param Dayal Pandit Faqir Chandji Maharaj," he claims

his purpose in life is "to change the wor thoughts."

"His name means 'supreme saint and mystic," said Dr. 1.C. Sharma, a visiting professor of philosophy at Old Dominion University and the author of several books and articles on philosophy, religion, politics and scriptures. Sharma's latest book, "Karma and Reincarnation" is published by Harper and Row (1975).

Sharma explained that Dayal acquired the title of "his holiness" from thousands of followers in India and other parts of the world including the United States.

"Many hundreds of pepole have experienced the power of his spiritual impact," said Sharma. "Many say he appears to them in time of need; some say that he has healed and cured them and many events which seem to be miracles have been credited to him although he does not claim to be personally aware of them."

Dayal has been staying at Sharma's Virginia Beach home since his arrival from Hoshiarpur, India, two weeks ago. He has given many lectures on philosophy and meditation. He intends to leave on Thursday.

Dayal doesn't fit the image of the customary Indian sage. He wears no special robes nor pries tly garments and he lectured for a short time recently with a woollen cap pulled down over his ears. "My experience has taught me that humanism is much better than spirltualism he said.

Paras Ram Aggarwal, a medical doctor, accompanied Dayal on his trip to Tidewater. "He (Dayal) is my spiriual master," said Aggarwal "1 have been attending him for 19 years."

"1 am an old man," said Dayal. "I could be subject to many ailments so I need a doctor with me." But there is nothing frail about Dayal despite his age. He bends his knees with agility as he crosses his legs, yoga fashion. He sits perfectly straight, not leaning on a backrest, reads without glasses, and speaks with a steady voice.

He raised that voice in vehemently when he denied knowledge of any miracles. He pointed to a note Book and said "Carefully put this down. 1 have no knowledge of these things; if I appear to someone, I swear, I am not aware of it. It is in their own mind.....I am convinced that what they see is an illusion or suggestion of me. It is not me; it is their own faith and faith is the essence of all beliefs and miracles"

Dayal stopped, lit a cigarette, adjusted hearing aid and continued.

"I have realized that when people belong to different religions; they honestly feel the presence of their spiritual ideal whether it is Krishna, if they are Hindu, Christ, if they are Christians, Buddha, f they are Buddists and so on.

"Actually, their experiences are not objective. It is a Person's inner attitude that makes him feel his particular master's presence.

"No one comes from the outside," he added. "It is because of training impressions, and suggestions and limiting the mind that a practical form appears and helps them," Dayal said. "That's why they are so sure of their faith. But this also creates problems.

"As a result of this, narrow-mindedness and igho ance, the followers of each religion have brought about division and created walls and wars between sects and religions; God is above the universal mind.

"From this I have concluded that the real God is not in the mental sphere," he added. "That man which appears to people 's the universal mind. The real God is ultrasound and light.'

Dayal said he promised his own guru or spiritual father, Maharishi Shiv Vrat Lal, who died in 1939 that he would carry this knowledge of truth to the world.

"That's why as an old man, I must be travelling even though it is more comfortable at home," said Dayal:

Dayal says he does not initiate his followers into meditation.

"A man who does meditation will get only that thing that which is in his subconscious mind" he said 'Without warning to keep the mind pure, meditation can be dangerous. Mind must be pure and thoughts good to meditate properly. I cannot know what thoghts are in the minds of my followers, so I do not advise them to meditate."

Dayal does meditate himself most of the day. He rarely sleeps and eats just a small portion of food in the morning and then drinks milk and other liquids during the day. He says he needs neither food nor rest to sustain his energy because he meditates completely.

He accepts no money from his disciples, "because I do live with my son and he supports me."

Dayal has founded an ashram (yoga retreat house), medical and dental clinics, and an eye hospital that are run by his disciples. "All the services are free, people can come and be attended to." The doctors and workers give their time for love of Him, Dayal says.

Dayal was married at 13, served in the British army, and was employed by the Indian railroad as a stationmaster.

He Said that many Indian gurus have come to the United States to enlighten, but they are failing "They (the gurus) are taking money and then not solving any problems," he said.

—•—

चेतावनी

कहता हूं सच घट में तेरे, राधास्वामी धाम है।
घट में सतगुरु सत की संगत, सत सभा सत नाम है ।।१।।
होगया बाहर मुखी तब, भूला अपने आपको ।
धंस के अन्तर खोज, अन्तर ही में सबका ठाम है ।।२।।
मैं तेरे घट का हूं वासी, और नहीं तुझसे पृथक ।
मिलता हूं चिन्ता जिसे, मेरी ही आठों याम है ।।३।।
राधास्वामी धाम का, दर्शन जो घट में हो तुझे ।
जीतेजी निर्वाण सुख, आनन्द और विसराम है ।।४।।

मौनी नल की कथा

कंडी लंका में बड़ा शहर है। शहर भी तीर्थ स्थान। इसमें एक मन्दिर है जहां बुद्ध भगवान का एक पवित्र दांत बतौर यादगार रक्खा है। इसी शहर के कानून पेशा वालों के मुहल्ले में एक व्यक्ति रहता था जो ईमानदारी के साथ दुकानदारी किया करता था। यही उसकी जीविका का साधन था।

एक दिन इस व्यक्ति के मन मैं मृत्यु का विचार आया। इसने अपने बेटे को बुलाया और कहने लगा—"नल ! बेटे !तू जानता है तेरी मां और बहिन सब संसार से कूँच कर गये। अब मेरे दुर्भागी शरीर के जाने की बारी आई। कर्म और विचार के प्रभावों को बिखर कर नये रूप में आना है। इस शरीर को छोड़ूंगा। अब कहीं और जगह नया जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि निर्वाण की मंजिल अभी बहुत दूर है। मैं सोचता रहा कि अपनी कुल सम्पत्ति मन्दिर को देजाऊँ और इसी विषय पर तुझसे सम्मति लेनी है। नल ने कहा—"बहुत अच्छा पिताजी। जैसी आपकी इच्छा हो। बाप ने कहा—"मैं पहले ही जानता था कि तुझे धन दौलत की चिन्ता नहीं है। न तू लालची है, सोचना समझना तेरा स्वभाव है। जो सोच समझ वाले आदमी हैं वह भूके नहीं रहते मगर मैं तुझको दो बातें बता देना चाहता हूं। पहिली बात यह है कि महात्मा बुद्ध का यह वचन हमेशा तेरी जुबान और मन में रहे कि जिसको वस्तु प्यारी नहीं है उसको दुखी रहने का अन्देशा नहीं रहता।" दूसरी बात यह है कि—"तू किसी स्त्री से कभी कोई प्रश्न न करेगा।" क्या तुमको इन बातों पर ठहरने का ख्याल है ?

आज्ञाकारी पुत्र ने उत्तर दिया कि मैं हमेशा इनकी पावन्दी करता रहूंगा। हमेशा इनको अपने बर्तमान जीवन का नियम बना

रक्खूंगा।" बापने कहा बहुत अच्छा यदि तू इनको स्वीकार है तो मैं अपनी सम्पत्ति तेरे हवाले करता हूं यद्यपि मन्दिर के लिये उनका बक्फ करना और भी अच्छा था। एक राय और देता हूं और वह यह है कि जो पेशा मैं करता था तू उसको न करना। मेरे पिछले जन्म के संस्कार इस तरह के थे कि मैं स्त्री ओर बच्चों के सम्बन्ध में फँस गया ओर उनके पालन पोषण के लिये दुकानदार बना। तू केवल खेती करना और इसी को अपनी जीविका का साधन बनाना। इससे किसी को हानि नहीं पहुंच सकती। कहावत मशहूर है—उत्तम खेती मध्यम वंज, निषिद्ध चाकरी भीख निदान।" बेटे ने इसको भी पसन्द किया।

समय आया बाप परलोक सिधार गया। बेटे ने धार्मिक रूप से उसका शोक मनाया क्योंकि वह नेक लड़का था और संसार के नाशवानता के विषय को भली प्रकार समझता था। इसने कुल सामान को बेच दिया। एक छोटा मकान मोल लिया और कुछ थोड़ी-सी जमीन भी मोल ली। मकान पहाड़ी पर था। इसलिये वह अधिकतर एकान्त में रहता था। खेती करना, कभी कभी समुद्र की उठने वाली लहरो को देखते रहना इसका नित्य कर्म था। इसको सन्तोष और शाप्ति प्रात थी। वह प्रति दिन सोचता था—"ओहो ! मेरा जीवन कैसा सुखदायक है। मुझे किसी से प्रीति नहीं। इसलिये दुख की हवा मुझको नहीं लगती।"

एक दिन की बात है कि जब वह सोच विचार में था एक काले रंग की चिड़िया फुदकती हुई दिखाई दी। इसके पर दूसरे पक्षियों की तरह चमकते नहीं थे। हां काले पक्षियों के साथ कहीं कहीं सफेद पर दिखाई आते थे। वह इधर उधर फुदकती रहती थी। नल इसकी दशा को देख कर खुश होता था।

नल ने सोचा "यह कैसी खिलाड़ी चिड़िया है।" इसने इसके साथ छेड़ छाड़ नहीं की। चिड़िया इधर से उधर कीड़ों की खोज में फुदकती रहती थी। कभी कभी नल की ओर देख कर उड़ जाती थी।

दूसरे दिन नल ने अपने बगीचे में फिर उसको देखा और इसी काम में लगा हुआ पाया। अब तो यह नित्य का काम होगया। वह इसके पास चहचहाती हुई आती। वह कह उठता तू बड़ी दिलेर चिड़िया है।" नल ने कभी भूल कर उसको छेड़ा नहीं। कभी वह खुश होकर दिल में कह उठता था कि इस पक्षी का कोई घर नहीं खुश है। सच कहा गया है—जिनके मकान और महल होते हैं वह अलग थलग ही रहते हैं। मकान में रहने का तो उनको सुख नहीं मिलता। हां, वह बन्धन की जंजीर ही बन जाता है।"

समय बीत गया कई हफ्ते इसी तरह बीत गये। एक दिन चिड़िया नहीं आई। नल इसका इन्तजार करता रहा मगर व्यर्थ। दूसरे दिन भी लापता तीसरे दिन भी यही दशा। नल को दुख हुआ। इसने मन में कहा—चिड़िया को क्या आफत आगई उसको किसी दूसरी जगह अच्छा शिकार मिलने लगा। या सांप निगल गया। या किसी चिड़ीमार ने जाल में फँसा लिया।" इसके अतिरिक्त वह क्या सोच सकता था। इसी समय महात्मा बुद्ध का बचन उसको याद आगया—जिसको कोई वस्तु प्यारी नही है उसको दुख की हवा भी नहीं लगती।" ऐ नल ! तू ने सच्चे गुरु का आदेश भुला दिया। इतने में कई दिन बाद वही चिड़िया फुदकती हुई दिखाई पड़ी और उसके पास पर फैला कर उड़ने लगी।

एक और दिन की घटना सुनो ! एक अबाबेल अपने बच्चों को दाना चुगा रही थी। बच्चा नन्ही सी शाख पर बैठा था। चिड़िया फड़फड़ाती हुई इधर उधर उड़ रही थी। जब उसको चारा मिल गया

वह लेआई। बच्चे ने अपनी चोंच खोली और चारा उसके अ डाल दिया गया। नल ने सोचा क्या विचित्र बात है। मां परोपकारी है। आप नहीं खाती बच्चे को खिलाती है। इस परिश्रम के लिये इसको घबराहट नही है। न वह बच्चे को बुरा भला कहती है और न अपने कष्ट की शिकायत करती है। इससे अधिक आश्चर्य की बात क्या हो सकती है।" उसका हृदय मां की दशा को देख कर प्रेम के प्रभाव से भर गया। सुबह से शाम तक वह इसी प्रकार की उधेड़ बुन में पड़ा रहा। रात हुई और वह सोगया। मगर इसी प्रेम के दृश्य का स्वप्न देखा किया। अन्त में इसने अपने मन में कहा— "अच्छा है कि मैं भी कोई स्त्री करलूँ। एक से दो अच्छे होते हैं। स्त्री कर लेने से मेरे प्रण में भी कमजोरी नहीं आती। धर्म भी विवाह की मनाई नहीं करता। क्या यह ठीक नहीं है कि मनुष्य विवाह करले और अपनी स्त्री के साथ प्रेम और आदर से पेश आये। में इससे कोई प्रश्न न करूँगा। यहीं तक मेरे प्रण की पावन्दी है।

यह बात इसके चित्त में बैठ गई। वह अपने मकान के दरवाजे पर बैठ गया और सोचने लगा—सम्भव है कोई क्वारी लड़की इधर आये और मुझसे विवाह करने की इच्छा से। कई औरतें इधर आईं। किसी के सिर पर टोंकरा था। किसी के सिर पर पानी का घड़ा था मगर कोई बात चीत नहीं हुई। ओह नल! व्याह करना सरल नहीं है। इस तरह काम न निकलेगा। शहर की ओर चलो। वहां सम्भव है काम बन जाय। वह शहर में आया मगर स्त्री दूसरी फितरत (प्रकृति) होती है। इसको स्त्रियों की ओर देखने से रोक थी। वह सवाल कर ही नहीं सकता था।

शहर के किनारे दूर पर एक झोंपड़ा दिखाई दिया जहां और व्यक्ति नहीं रहता था। इसके सामने एक लड़की हाथ में पट्टी,

भैंस के सींग हाथी दांत और शकर लिये बैठी थी। नल वहां ठहर गया। हर चीज को देखा इसके मन में पूछने की इच्छा तो हुई मगर साहस न हो सका। जब वह कुछ देर इसी तरह चुपचाप खड़ा रहा तो लड़की स्वयं बोली—"तुम यहाँ क्यों खड़े हुए। न बात न चीत। आखिर खड़े होने का अभिप्राय क्या है? नल ने कहा—'मैं पूछ नहीं सकता। क्यों नहीं? क्योंकि मैंने पिता से सौगन्ध खाई है। लड़की मुस्कराई। ओ हो! कानून पेशे वालों के मुहल्ले के नल हो। मैं इस मुहल्ले मैं नहीं रहता। अब पहाड़ी के दामन में रहता हूं। मेरा घर सब से अलग थलग है।" क्या हर्ज! मैं तुमको अच्छी तरह जानती हूं। वह खिलखिला कर और मोती की तरह स्वच्छ दांतों को दिखा कर हँस पड़ी। लड़की ने फिर बात चीत शुरू की। लोग कहते हैं कि तुमको स्त्री से सवाल करने की कसम है। फिर तुम्हारा विवाह कैसे होगा। जब तक तुम किसी स्त्री से न पूछोगे। हाँ, नहीं, उत्तर कैसे मिलेगा।

नल को आश्चर्य हुआ। वास्तव में बात ऐसी ही थी। इसने पहिले इस पर कभी नहीं सोचा था। इसने सिर खुजाया, आँखें मलीं और टकटकी बांधकर स्त्री की ओर देखने लगा। औरत ने कहा—खैर! घबराने की बात नहीं है। अगर तुम सवाल नहीं करते तो मैं स्वयं इस पट्टी, भैंस के सींग, हाथी दांत और शकर का अभिप्राय बताऊँगी। शकर से अभिप्राय यह है कि मेरा पति मधुर भाषी हो। वह भैंसे के सींग की तरह मजबूत हो, हाथी की तरह बुद्धिमान गम्भीर और भला हो।

नल चिल्ला उठा—"राम राम! यदि सब स्त्रियां इसी मिजाज की हों तो विवाह करना कठिन हो जायगा।" लड़की फिर कहकहा मार कर हँसने लगी जिसमें वह बड़ा अचम्भित हुआ और अपने

मन में कहा—"नल ! कंडी में तुमको स्त्री न मिलेगी। यह स्त्रियां तुमको देख कर हँसी उड़ायेंगी।

वह निराश होकर घर की ओर लौटा। फिर उत्तर की ओर मुड़ा। इरादा था कि जब तक स्त्री न मिले वापिस आना व्यर्थ है। वह कई दिनों तक घूमता रहा। सड़कों पर गाड़ियां दौड़ रहीं थीं। गाड़ी वालों ने पूछा—"तुम किधर और कहां को जाओगे ?" इसने उत्तर दिया—"मैं नहीं जानता।" इस पर वह हँस पड़े। इसने कहा—"अच्छा ! क्या हुआ ! हँसो। जो दूसरों पर हँसेगा, वह हँसा जायगा। मुझको क्या पड़ी है कि मैं हर एक को अपने भेद की बात बताता रहूं।"

एक दिन किसी सुन्दर झील के किनारे वह सड़क पर आया। दो छायादार पेड़ लगे हुए थे। भीनी भीनी वायु चल रही थीं। कुछ दूर पर एक छोटा मगर शानदार पेड़ खड़ा था। वह उसकी ओर गया। मन में आई कि झील के किनारे वृक्ष की छाया के नीचे पड़ कर सोरहे मगर उसी समय एक दर्दनाक आवाज सुनाई दी। इसने किसी स्त्री को पेड़ से गिरते हुये देखा, इसकी सहायता को दौड़ा मगर उसको चोट नहीं आई थी। केवल पांव में मोच आगई थी। स्त्री चिल्लाती रही। नल इसके पास बैठ गया। इसने समझा कि मोच नहीं है शायद हाथ टूट गये हैं मगर प्रश्न करने की कसम थी। लड़की थोड़ी देर चुप रही। इसको आश्चर्य था कि यह पुरुष कोई प्रश्न नहीं करता। अन्त में विवश होकर उसने जुबान खोली। "तुम बोलते क्यों नहीं। क्या तुम जानते हो कि मैं इस पेड़ पर क्यों चढ़ी थी ?" "नहीं मैं नहीं जानता।" "तब तुम कारण पूछो ?" "मैं नहीं पूछ सकता। मैंने पूछने की कसम खाई है।" "राम राम ! कैसी कठिन और कैसी बुरी कसम है। मगर यह तो बताओ कि अगर तुम जंगल में राह भूल जाओ तब भी किसी से न पूछोगे ?

फिर रास्ता कैसे मिलेगा ?" यह बातचीत नहीं है मुझको केवल स्त्री से प्रश्न करने की कसम है। "लड़की हँसी, मुस्कराई।" आ हा ! चूंकि तुम नहीं पूछते मैं तो स्वयं ही पेड़ पर चढ़ने का कारण बताऊँगी मगर पहले तुम अपना नाम तो बताओ।" "मेरा नाम नल है।" और मेरा नाम कथा है । कथा-कथा ! मगर मेरा यह असली नाम नहीं है। लोग मुझको कथा कहते हैं। तुम भी अगर चाहो तो इसी नाम से मुझे पुकारो। देखो यहां से थोड़ी दूर एक गांव है। उसका नियम है कि जब किसी लड़की को विवाह करने की इच्छा होती है तो दिन के समय पेड़ पर चढ़ जाती है। जो पुरुष उसको देख लेता है वही उसका पति होता है। यदि कोई न देखे तब उसका विवाह नहीं होता। मैं पेड़ पर चढ़ कर फल खाने लगी। तुम दिखाई दिये। मैं डर गई। डर के कारण पांव फिसल गया और मैं गिर पड़ी।"

मेंने कहा—"बड़े खेद की बात है। मगर मैं कैसा दुर्भागी हूं। मैंने तुमको पेड़ पर नहीं देखा। जब तुम गिर पडीं, तब मेरी दृष्टि तुम पर पड़ी। "क्या तुम सच कहते हो ? क्या तुमको इसका विश्वास है ?" हां मैं सच कहता हूं। मुझको अपनी बात का विश्वास है।" नल ! क्या तुमने मुझको ऐड़ी के बल गिरते हुए देखा ?" "सम्भव है ऐसा हुआ हो।" क्या तुमने गिरते हुए मुझे अज्ञानी और असभ्य स्त्री समझा ?" नल सोचने लगा। स्त्री बोली "सोचो और सोच कर उत्तर दो।" नल ने कहा—"मैं कुछ नहीं जानता। तुम केवल गिर पड़ी थीं। "क्या तुमने पहिले भी किसी स्त्री को पेढ़ से गिरते हुए देखा था ?" "नहीं, मैंने कुछ नहीं देखा।

थोड़ी देर चुप रहने के वाद स्त्री ने फिर कहा--'नल ! यदि तुमने मुझे ऐढ़ी के बल गिरते हुये देखा है तो कोई बात नहीं है। अब भी सब कुछ हो सकता है मगर मैं कैसी मूर्ख हूं। "इसने पूछा—

"यदि तुमने मुझको पेड़ पर नहीं देखा तब फिर ?" नल ने उ
दिया था। तुम ठीक हो। वह कह कर चुप होगया।

स्त्री ने कहा—"मुझको घर जाना है।" यह कह उठी मगर पांव में मोच थी, गिर पड़ी और दर्द से चीखने लगी। "हाय ! मैं घर कैसे पहूंचूंगी !" नल ने कहा—"कोई हानि नहीं ! मैं तुमको उठा कर ले चलूँगा।" वह फिर हँसी—"मेरा घर दूर है। तुम मुझको इस सड़क तक पहुंचादो। कोई गाढ़ी मिल जायगी। उसमें बैठ कर घर चली जाऊंगी।" नल ने उसको उठा लिया। वह जरा झिझकी। इससे कतराने लगी। नल ने कहा—अपने दोनों हाथ मेरी गर्दन में डाल दो। इस ढंग से मैं तुमको ले जा सकता हूं। जब नल ने इसको अपनी गोद से चिपटा लिया वह कहने लगी—"नल ! मैं तुमको प्रेम करती हुं। "तब तुमको मेरी स्त्री होना पसन्द है। इसने उत्तर दिया—आहा ! क्या अच्छा ! मेरे ग्राहक तुम्हारे ऐसे और भी कितने होंगे। नल ने कहा—सोचो मैं ख्याल करता हूं। हिम्मत है मैंने तुमको पेड़ पर देखा हो। वह हँसी—यह लड़कियों का चोचला है। गांव की सब लड़कियां ऐसा ही कहा करती हैं। तुम भूल कर भी यह न समझो कि कुल बात का फैसला होगया। तुमने मुझे केवल पेड़ से गिरते देखा है। बात तो एक ही है। हां मगर शर्त यह है कि मैं तुमको पसन्द करूँ तब मगर तुमने स्वयं ही स्वीकार किया है कि तुम मुझको प्रेम करती हो। मगर यह कोई बात नहीं है। जब तक तुम मुझसे पत्नि होने के लिये मुझ से सवाल न करो तब तक तुम्हारे साथ मेरा बिवाह होना असम्भव है। "मगर मैं किसी स्त्री से कोई सवाल न करूँगा।" अच्छा मानलो तुम्हारा विवाह भी होगया। क्या तुम अपनी स्त्री से यह न पूछोंगे कि वह तुमको प्रेम करती है या नहीं। नहीं मैं कभी न पूछूँगा।

उसने इसकी गर्दन को अपने हाथों से थोड़ा और मजबूती से

जकड़ लिया। नल ! क्या अब तक तुम थके नहीं ? 'नहीं" वह हँसी ! नल बिना सवाल किये मुझसे बच नहीं सकते। हाँ अगर तुम सीधे पूछते तो मैं किसी न किसी और ही ढंग से तुमसे पुछवा लूँगी तुम मुझको यहां से गाँव तक ले चलो। मैं बिना कोई सवाल किये तुम्हारी पत्नि हो जाऊँगी और वहां पहुंच कर तुम्हारा चूमा मानो तुम्हारे साथ मेरी मगनी हो चुकी है। लेकिन अगर कहीं राह में मेरे उत्तर देने को कहा तो फिर समझ लेना कि सब किया कराया खेल बिगड़ जायगा। हां यदि मैं भारो हो जाऊँ और तुम केवल इतना ही कह दो—कथा क्या तू मेरी पत्नि होगई ? तो कोई हर्ज नहीं।

वह सड़क पर पहुंचे। नल बलवान था, इसने सोचा कि स्त्री का बोझ ही क्या होता है। मैं इसको सरलता सें उठा लेजाऊँगा और सुगमता से विवाह हो जायगा। यदि आज सफल रहा तो जीवन भर सफल रहूंगा। स्त्री वेशक संसार का कीमती खजाना है।

इसने सोच कर कथा को उत्तर दिया—"बहुत अच्छा—मैं राजी हूं। गांव तक तुमको ले चलूँगा, नहीं—तुमने सोचा क्या है ! केवल वहां तक ले चलो जहाँ बुद्ध देव की पत्थर की मूर्ति खड़ी है। मैं तुमको स्वयं बता दूँगी। वहां केवल एक ही मूर्ति है। अच्छा मेरी भी शर्त है। वह क्या है ? मैं भी तो सुन लूँ। पहिले में तुमको एक बार यहाँ उतार दूँगा"। स्वीकार है। इसने इस सुखदायक बोझ को जमीन पर रख दिया। दूसरी शर्त यह है कि तुम दृढ़ता के साथ मुझसे चिपट रहो। शरीर ढीला न रहे ताकि लेजाने में आसानी हो। यह भी स्वीकार है। तीसरी शर्त यह है कि रास्ते में मुझसे कोई बात न कहो। यदि एक शब्द भी मुँह से निकला तो तुम हारीं और मैं जीता। यह भी स्वीकार है।

नल ने अपने काम की शर्तें स्वीकार करालीं। केवल एक बात

बाकी रह गई। इसको गांव का फासला मालूम नहीं था मः सवाल पूछना नहीं चाहता था। जब सस्ता चुका, स्त्री इसके सीने पर चढ़ बैठी। इसका वोझ फूल से भी हल्का ज्ञात हुआ। यह बालिग स्त्री है या कोई नन्हा बच्चा है। शर्त के अनुसार वह इसके शरीर से चिपट गई। "क्या इस तरह का चिपटना तुमको स्वीकार है ? मगर अभी तुमने अपना कदम राह की ओर नहीं बढ़ाया। नल ने कहा—हां, यह चिपटना मुझको पसन्द है। अब मैं चलता हूं।

वह अकड़ता इठलाता धीरे धीरे चल निकला। इस तरह का बोझ लिये हुए तो मैं जीवन भर बिना थकान के चलता रहूं और कभी सांस लेने का भी ख्याल न करूँ। दोनों का शरीर मिल कर एक होगया और वह स्त्री के नब्ज की गति और इसके शरीर के नस नाढ़ी की गति तक की आवाज को सुन सकता था। इसके सांस की वायु नल के मुँह को लगती थी। आ हा ! कैसी सुखदायक और ठंडी है। इस तरह तो मैं जीवन में कभी खुश नहीं हुआ था। वह चुप होकर खुशी से चला, सरपट चला। दुलत्ती चला। समझ में नहीं आता कि महात्मा बुद्ध ने यह बात क्यों कर कही है कि जिसको कोई वस्तु प्यारी नही है उसको दुख की कोई हवा नहीं लगती। देखो ! यह स्त्री मुझको प्यारी है और मुझको कोई भी दुख नहीं है। अज्ञानी नल ! क्या तू अपने प्रण पर स्थिर नहीं रहेगा और इस सिद्धान्त को त्याग देगा ? भय का सामना है। परीक्षा का समय है। देखना है कि इसका क्या परिणाम होता है।

दो पहर का समय था, सूर्य की निर्दयी किरणें आग की चिनगारी की तरह भभक भभक कर निकल रही थीं। नल अभी दो चार सौ कदम गया होगा कि इसको थकान और प्यास ने सताना शुरू किया। स्त्री इसकी छाती से चिपटी हुई थी। चुप चाप। क्या मजाल कि इसकी जुबान से एक शब्द तो निकले। नल की शेखी

किरकिरी होगई। अब कदम हल्के पड़ने लगे। सवाल करने की इच्छा हुई। या तो इधर या उधर। बस एक बात पर ठहरा है फैसला दिल का। मगर प्रण के टूटने का भय था।

वह इन्तजार में था कि शायद स्त्री कुछ न कुछ स्वयं कहेगी, ढारस देगी रास्ता कटने की युक्ति समझा देगी मगर वह गलती पर था। वह मूर्ति की तरह चुप थी। साँस फूलने लगा। माथे पर पसीना आगया। जो हल्का शरीर पहिले फूल की तरह का था अब शीशे की तरह भारी होगया। इसने चाहा कि बोझ को इधर से उधर की ओर सरका कर थोड़ा आराम की सूरत पैदा करे मगर स्त्री जिद्दी थी। त्रिया हठ को सब जानते हैं। वह ऐसी चिपटी कि गला छोड़ना कठिन होगया। इसने सोचा कि स्त्री साक्षात् हठ है।

मगर स्त्री की दशा इसके प्रतिकूल थी। चल चल घोड़े कैलाश, बचा एक न घास! वह आराम से चिपटी रही। वह जानती थी कि नल की क्या दशा है मगर इसको क्या परवाह है। जब यह इतना हठीला है कि मरते मरते भी अपने मूर्खता के प्रण को नहीं तोड़ सकता तो मुझको क्या पड़ी है कि मैं अपनी बात को कमजोर करूँ; यदि मैं आज अपने पर न ठहरी तो आयु पर्यन्त ऐसी ही रहूंगी। इसके सिवाय मुझको क्या हानि है। यदि वह हार गया और मैं जीत गई। यदि वह मुझको मूर्ति तक लेगया तब भी मेरा क्या बिगड़ा। इस तरह सोच कर वह जोंक की तरह उससे चिपटी रही। नल की गोद उसका हिंडोला था। वह झूल रही थी और नल के हाँपने की आवाज इस तरह सुनती रही जैसे जहाजी जहाज के मस्तूल, बादवान और शहतीरों के कतरने की आवाज सुना करते हैं।

नल थक गया! मुँह पर हवाइयां उड़ने लगीं। चेहरा पीला पड़ गया। गले से बीमारों जैसी कराहने की आवाज निकलने लगी।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

सरपट, दुलत्ती और अकड़ की चाल सब भूल गया। स्त्री ने नर सूरत की ओर देखा। पीली पड़ गई थी। नसें खड़ी होगई था। आंखें बाहर की ओर उभर आई थीं। नल ने इसकी ओर देखा जी में सोचा "धन्य है अब इसने मेरी दशा देखली। क्या आश्चर्य कि कह उठे—नल ! बस बस हो चुका ! अब अधिक कष्ट न उठाओ। मगर इसने फिर धोखा खाया।

स्त्री ने इस तरह उसकी ओर देखा जैसे कोई अजनबी को देखता है और डर के मारे अपने साथियों से चिपट जाता है। इसका हाथ और भी मजबूत होगया। इसने होठ दांतों से खूब दबा लिये। यदि यह अपने प्रण पर डटा है तो मुझको भी अपने बचन का ख्याल है।

नल ने सोचा—स्त्री कैसी निर्दयी होती है। प्रत्यक्ष देखने में सुन्दर, अन्तर में विष ! इसने अन्तिम बार फिर कोशिश की। बुद्ध की मूर्ति की सड़क की ओर चला। सम्भव थां कि इसका पाँव डगमगाये और वह चारों खाने चित्त हो, मगर नहीं। मर्द था सच्चा दृढ़ता के साथ स्त्री के थकाने वाले बोझ को लाकर मूर्ति के पांव के नीचे लेजाकर उतार दिया। लड़की ने हाथ फैलाया। वह चाहती थी कि नल के मुँह का बोसा दे जैसे कि लंका में मंगनी के समय लड़कियों में रिवाज होगा मगर नल की दशा कुछ और ही थी। इसने लम्बी साँस ली। ऐसा मालूम हुआ मानो इसके कन्धे से कोई बहुत बड़ा बोझ उतार लिया गया है। इसने कहा—ठहरो कथा ! "बेचारे ने मुँह का पसीना पोंछा। गले का पसीना पोंछा। पसीना क्या था छोटे मोटे सोने का पानी था जो निकलता चला आरहा था। रूमाल, लंगी सब तरबतर, सब कपड़े पसीने से भीग गये। इसको अब जल्दी नहीं थी। वह सम्मान और श्रद्धा के साथ बुद्ध-देव की मूर्त्ति को ध्यान से देखता रहा। यह पत्थर की प्रत्यक्ष बेजान मूर्त्ति इस पर दया दृष्टि से देख रही थी। मगर लड़की की

क्या दशा थी। उसकी दशा ऐसी थी जैसे किसी को छींक आती हो और छींक न रुके। जैसे किसी के मुँह में पानी भरा हो और वह उसे फेंक न सके। जब नल ने दम ले लिया, इससे बोला—कथा! मेरा ख्याल है मैंने तुमको पेड़ पर नहीं देखा और नऐड़ी के बल गिरते हुए देखा। मैंने केवल तुमको पेड़ के नीचे गिरी हुई पाया। इसलिये तुम फिर जाओ पेड़ पर चढ़ो और उसके फल खाओ।

यह कह कर वह वहाँ से यकायक चल खड़ा हुआ। न दाये देखा न बांये। जहाज तूफान में था। हवा के झोंके उसको तोड़ने मरोड़ ने और समुद्र की लहरें इसके डुबाने की फिक्र में थीं। उसको यकायक रक्षा का किनारा दिखाई दिया। बच निकला। किनारे की ओर चला। वहां ही इसको खैरियत की सूरत दिखाई दी। नल घर को लौट आया। पहाड़ की चोटियाँ, समुद्र की लहरें सुबह शाम का सूर्य, वृक्षों के फूल पत्ते, यह सब इसके साथ खामोशी की जुबान में बात चीत किया करते थे। वह पहाड़ी के दामन में बहुत समय तक जीवित रहा। ऋषि विख्यात हो गया। लोग इसको ज्ञानी और मुनि समझने लगे। जिस पर कोई आपत्ति आती वह इसके पास आता। पिता तुमको कैसे शान्ति मिली है। वह उत्तर देता—जिसको किसी वस्तु से प्यार नहीं है उसको दुख की हवा के झोके नहीं लगते। यदि कोई साधारण आदमी इससे मिलने आता तो वह कहा करता—स्त्री से कभी सवाल न पूछो।

इस तरह नल अपनी बुद्धिमानी के लिये दूर दूर प्रसिद्ध होगया। जिस किसी का जीवन दूभर हो वह यातो नल से जाकर मिले और उससे सन्तुष्टि देने वाले उपाय सीखे। यदि वह जीवित न हो तो उसके जीवन के इन दोनों नियमों को याद करे।

इससे अधिक कहना व्यर्थ है। स्पष्ट बात पर कोई क्यों रंग चढ़ाये।

दातादयाल अमरीकी प्रैस वालों की दृष्टि में

द्वारा—कैमी सैसा, बरजीनिया—(पाइलौट स्टाफ लेखक)

फकीर दयाल

"जो वे देखते हैं वह एक इन्द्रजाल (माया) है'।

बरजीनिया बीच—९० बर्षीय फकीर दयाल ५ फिट कद वाले एक छोटे से आदमी हैं लेकिन उनका बड़ा नाम है और उन पर बड़ी जिम्मेदारियां हैं।

वह परम दयाल परम सन्त पं० फकीरचन्द जी के नाम से विख्यात हैं तथा उनके जीवन का उद्देश्य विश्व के विचारों को बदलना है।"

डा० आई० सी० शर्मा जो ओल्ड डोमीनियन विश्व विद्यालय में दर्शन शास्त्र के विजिटिंग प्रौफेसर तथा जिन्होंने धार्मिक राजनैतिक तथा अन्य बिषयों पर बहुत से लेख लिखे हैं के अनुसार उनके नाम का तात्पर्य 'परम सन्त और तत्वदर्शी है। शर्माजी कीं एक किताब 'कर्म और रोइनकारनेशन' हार पर और रौ द्वारा सन १९७५ में ही प्रकाशित हुई है।

शर्मा जी ने पत्रकारों को बताया कि महाराज को 'दातादयाल' का खिताब उनके हजारों की संख्या में शिष्यों ने दिया है जो भारत वर्ष तथा विश्व के अनेक भागों में फैले हुये हैं। उनकी आत्मिक शक्ति का अनुभव उनके सैकड़ों शिष्यों को हुआ है ' बहुत से लोग कहते हैं कि 'दाता दयाल' अपने शिष्यों की उनकी जरूरत के समय मदद करते हैं, कुछ कहते हैं कि उनको बीमारी से ठीक किया है

तथा बहुत से ऐसे चमत्कार हैं जिनके बारे में महाराज को स्वयं कोई ज्ञान नहीं है।

'दाता दयाल' शर्माजी के वरजीनिया बीच निवास स्थान पर ठहरे हुए हैं। उनके कई प्रवचन दर्शन शास्त्र और ध्यान योग पर हुए हैं।

महाराज साधारण मनुष्यों की तरह का जीवन व्यतीत करते हैं। वह कोई विशेष वस्त्र नहीं पहनते। उन्होंने सिर पर केवल एक गर्म टोपी पहन कर सतसँग कराया था और कहा था कि "मेरे अनुभव ने मुझको सिखाया है कि मनुष्यता अध्यात्मवाद से बढ़ कर है।

श्री परसराम अग्रेवाल जी जो महाराज के साथ ही विदेश यात्रा पर गये हुये हैं, एक पत्रकार सम्मेलन में बोलते हुये कहा, कि हुजूर महाराज मेरे आध्यात्मिक गुरु हैं और उनको दाता दयाल की सेवा करने का अवसर लगभग १९ वर्ष से है"। महाराज काफी बृद्ध हैं इस कारण डाक्टरी सहायता की हर समय उनको आवश्यकता रहती है जो कि स्वयं परसरामजी उनकी सेवा करते हैं।

महाराज काफी बृद्ध होने के बावजूद बिना चश्मा लगाये पढ़ सकते हैं, लिख सकते हैं, आवाज मैं दृढ़ता तथा बिना किसी सहायता के चल फिर सकते हैं और इस प्रकार पालती मार कर बैठते हैं जिस प्रकार कि कोई ध्यान की अवस्था के लिये आसन लगाता है।

महाराज ने अपने अनुभव के आधार पर बताते हुए कहा कि सतसंगी अपने ध्यान के आधार पर अपने अन्दर उनको प्रकट करके अपनी समस्या का हल निकालते हैं मगर इसका उनको कोई ज्ञान नहीं होता है यह स्वयं उनके लिये एक रहस्य है। यह सत्संगियों का अपना विश्वास व श्रद्धा है।

यह चमत्कार सतसंगियों के अपने ही विचार श्रद्धा और विश्वास का फल है।

उन्होंने आगे कहा, "सतसंगियों के अन्दर मेरा रूप प्रकट हो उनका काम कर जाता है लेकिन मुझको इसका कोई पता नहीं होता। कोई राम, कृष्ण, कोई देवी, देवता और कोई गुरू किसी के अन्तर नहीं जाता। यह तुम्हारा अपना ही ख्याल और अपना ही विश्वास है। यह तुम्हारा अपना ही मन है, यह सब तुम्हारे अपने ही वचनों का परिणाम है। संस्कार के अनुसार अन्तर में शक्ल बनती हैं। जैसा संस्कार होगा वैसी ही शक्ल बनकर तुम्हारे सामने आयेगी। अज्ञान के कारण ही आदमी यह समझता है कि सचमुच राम, कृष्ण या कोई गुरु उसके अन्तर प्रकट हुआ।

इसी अज्ञानता और संकीर्ण विचारों के कारण विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में लड़ते हैं और प्रत्येक धर्म के बीच दीवारें खड़ी करदी हैं। मालिक यूनीवरसल माइन्ड से परे हैं असली मालिक शब्द और प्रकाश है।

महाराज ने अपने गुरु श्री शिवब्रतलालजी को यह बचन दिया था कि इस सन्देश को संसार में फैला देंगे। महाराज शिवब्रतलाल जी इस संसार को १९१४ में छोड़ गये थे। यही कारण है कि उनका सन्देश फैलाने के लिये वह जगह जगह जाकर लोगों को सचाई का ज्ञान कराते है।

महाराज अपने शिष्यों को नाम दान नहीं देते।

उनका कहना है कि जो मनुष्य ध्यान करते हैं उनको वही फल मिलता है जो उनके अचेतन मन में होता है। मगर मस्तिष्क को पवित्र किये बिना ध्यान करना खतरनाक है ठीक प्रकार ध्यान करम के लिये मस्तिष्क का पवित्र और विचारों का शुद्ध होना परम आवश्यक है। यही कारण है कि मैं अपने शिष्यों को ध्यान करने के लिये नहीं कहता क्योंकि पता नहीं उनके दिमाग में क्या विचार हैं।

महाराज दिन में अधिकतर ध्यान में ही रहते हैं। उनका भोजन बहुत ही सूक्ष्म हैं। वह बहुत कम सोते हैं। उनका कहना है कि शक्ति प्राप्त करने के लिये उनको न भोजन की ओर न जाराम की आवश्यकता है क्योंकि वह पूरी तरह समाधि में रहते हैं।

वह अपने शिष्यों से कोई धन नहीं लेते क्योंकि उनका लड़का खर्च देता है।

दाता दयाल ने होशियारपुर (पंजाब) में एक आध्यात्मिक केन्द्र की स्थापना की है। उनके शिष्यों द्वारा एक औषधालय, एवं दांतों और आंखों के दवाखाने चलाये जाते हैं जहां मुफ्त में इलाज होता है।

दाता दयाल का विवाह उनकी १३ वर्ष की आयु में हुआ था उन्होंने भारतीय फौज में और उसके बाद भारतीय रेलवे में स्टेशन मास्टर की स्थिति में कार्य भी किया था।

अन्त में उन्होंने कहा कि भारत बर्ष से बहुत से गुरु संयुक्तराज्य में आये हैं, मगर वह लोगों से धन इकट्ठा करते है और उनकी समस्याओं का समाधान नहीं करते हैं।

अनुवादक
प्रभूदयाल मीतल

निवेदन

इस बर्ष में केवल एक माह बाकी है मगर बहुत से भाइयों ने अभी तक वार्षिक चन्दा नहीं भेजा भेजा है। अतः भाइयों से अनुरोध है कि वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क भेजने की कृपा करें।

प्रकाशक

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर

दिनांक १६ अक्टूबर १९७५

राधास्वामी ! दोस्तो ! मेरा जीवन किसी खोज में बीता है। कल यहाँ एक विवाह था। श्री 'सुधीर' और 'मेरी' अमृतसर के मेरे मित्र श्री बी वी भटनागर साहिब का लड़का जो कि इंजीनियर है वह अमेरिका गया और वहां नौकरी ले ली। वहां इटली की एक mary नामी लड़की से प्रेम होगया। वे आपस में विवाह करना चाहते थे। लेकिन दोनों के माता पिता सहमत नहीं थे। मगर उन्होंने विवाह कर लिया और मैंने कराया।

ऐसा क्यों होता है ? जहां तक मेरा अनुभव है और ऋषि भी कहते हैं कि हमारे प्रालब्ध कर्मानुसार हमारा मेल होता है। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे बताया था कि मैं पिछले जन्म में गौतम बुद्ध था और तुम मेरे भिक्षु थे। यद्यपि मेरे पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं। लेकिन वह उनके द्वारा पता लगा था। संसार में हम देखते हैं कि कई बच्चे अपने पिछले जन्म का हाल बताते हैं कि अमुक मेरा भाई था, अमुक बहन और अमुक मां बाप थे और अमुक अमुक बच्चे थे और पता करने पर वे ठीक होते हैं कल रसाला दयाल आया। उसमें मैंने पढ़ा कि भाई नन्दूसिंह जी जब हुजूर दाता दयालजी महाराज के साथ धाम में रहते थे तो वह कई दिन तक प्रतिदिन किसी आदमी को धूप में फिरता हुआ देखते थे। एक दिन भाईजी ने उसको डन्डा मारा तो वह लोप हो गया भाई जी चकित होगये और दातादयाल जी महाराज को सा

कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि आज जब वह आदमी आये तो उसको कहो कि वह मेरे पास आये। जब वह दूसरे दिन फिर आया तो भाई जी ने उससे कहा कि तुमको दाता बुलाते हैं। वह सेवा में उपस्थित हुआ। हुजूर ने उससे कहा कि देखो भाई! यहां हमारे आदमी रहते है। इसलिए तुम यहाँ न आया करो। उसके बाद वह फिर नही आया। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने बताया कि किसी समय उस आदमी को यहां मार दिया गया था।

ऐसी घटनायें हमको आवागवन को मानने के लिये विवश करती हैं। हुजूर दातादयाल जी महाराज जब चुनार में मुख्याध्यापक थे और अभी तक वह पंथ में भी नहीं आये थे। रात को एक महिला उनके कमरे में आई। हुजूर ने उससे पूछा कि तुम रात के समय अकेली मेरे कमरे में क्यो आई हो? उसने कहा कि मैं अमुक मुसलमान की स्त्री हूं और मर चुकी हूं। मेरा तीन साल का बच्चा मेरे पति के पास है। बच्चे के पेट में केंचुये हैं और मेरा पति उसकी परवाह नहीं करता। आप उससे कहें कि वह बच्चे को धूप में लिटा कर उसके पेट पर तिल के तेल की मालिश करे। बच्चा ठीक हो जायेगा। फिर वह महिला चली गई। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने प्रातः उस आदमी को बुला कर सारा समाचार बताया। उसने उसके अनुसार अमल किया और बच्चा ठीक होगया,

मैं यह सत्संग तुम लोगों को नहीं बल्कि अपने आप को ही करा रहा हूं। मैं अब आप लोगों को सत्संग कराने के योग्य नहीं रहा। मुझे गुरु बनने की इच्छा नहीं। मैं तो देखना चाहता था कि मेरा मालिक कहां है। मैं कौन हूं और मेरा आदि घर कहां है। गुरांवाला (पाकिस्तान) की एक घटना बहुत समय होगया समाचार पत्र में निकली थी एक मकान में एक आर्य समाजी रहता था। उसके

मकान के अन्दर किसी के चलने की आवाज सुनाई दिया व थी। एक दिन एक महिला उसके सामने आई। वह आर्य समाजी डर गया। महिला ने कहा कि तुम डरो मत। मैं ब्राह्मणी हूं। एक मुसलमान से प्रेम होगया और आपस में विवाह कर लिया। लेकिन मैंने अपना धर्म नहीं छोड़ा। हम दोनों इस मकान में रहते थे। मेरा अन्तिम समय आगया। मैंने अपने पति से कहा कि मेरी मौत के बाद मेरी लाश को जला देना। वह मेरी लाश को दफन करना चाहता था। लेकिन मुसलमानों ने मेरी लाश को कबरिस्तान में इसलिये दफनाने नहीं दिया कि मैं हिन्दू थी और हिन्दुओं ने शमशान भूमी में मेरी लाश को जलाने की इसलिए आज्ञा नहीं दी कि वह मुझे मुसलमान समझते थे। आखिर मेरे पति ने मेरी लाश को अमुक कमरे में दबा दिया। तुम उस जगह से मेरी हड्डियां निकाल कर जला दो और राख हरिद्वार पहुंचा दो। उस आदमी ने ऐसा ही किया। उसके बाद वह स्त्री उस मकान में कभी दिखाई नहीं दी।

मेरी एक आंखों देखी घटना सुनो। मैं बसरा बगदाद में रेलवे में काम करता था और कभी कभी "समारह" रेलवे स्टेशन पर जाया करता था। वहां के स्टेशन मास्टर का मकान थोड़ी दूर था। जो भी कोई आदमी सायं या रात के समय उसके मकान पर जाता तो उसको पत्थर पड़ते थे जब तक कि वह आदमी किसी मकान में प्रबेश न कर पाये। लेकिन वे पत्थर किसी को लगते नहीं थे। वहाँ लोगों में यह विचार पाया जाता है कि वहां एक हिन्दुस्तानी कांटेवाला गाड़ी के नीचे आकर कट गया था और उसकी रूह ये पत्थर मारती है।

ये सारी बातें जन्म मरण और आवागवन को सिद्ध करती हैं कि शरीर छोड़ने के बाद हमारा सूक्ष्म शरीर रहता है। जिसकी

अचानक मौत हो जाती है और उसको मरने का पता नहीं होता। उसकी रूह भटकती रहती है और जिनको अपने मरने का ज्ञान हो जाता है। मरने के बाद उनके कर्मानुसार उनको दूसरा चोला मिलता है।

मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! संसार में तो दुख ही दुख है तो फिर सुख कहां है ? संसार में बच्चा पैदा होता है। उसको कोई कष्ट है। वह न बोल सकता है और न बता सकता है। वह दुख के कारण रोता है। माँ बाप भी समझ नहीं सकते। वे भी दुखी होते हैं। जब बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है तो फिर उसको पढ़ने के लिये भेजते हैं। लेकिन वह जाता नहीं तो मां बाप उसको मारते हैं। जब जवान हो जाता है तो उसका विवाह कर देते हैं। बाल बच्चे हो जाते हैं। उनके पालन पोषण की चिन्ता हर समय लगी रहती है। किसका बच्चा मर जाता है, किसी की स्त्री मर जाती है और किसी का पति मर जाता है, किसी को कोई बीमारी हो जाती है। यहां कितना दुख है। इससे बचने का क्या उपाय है ? मैं अब बूढ़ा होगया हूं। यद्यपि जीवन में मुझे कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ, लेकिन फिर भी क्योंकि यह शरीर है कोई न कोई छोटा मोटा कष्ट कई बार होता ही रहा है। अब इस समय भी मुझे स्वारथ है। कई दुखी लोग मेरे पास आते हैं। दिल्ली में मेरे एक मित्र के बच्चा पैदा हुआ। काफी स्वस्थ था और अब बहुत बीमार है। माँ-बाप बहुत दुखी हैं। संसार में कोई सुखी नहीं है लेकिन आप लोग इन दुखों से बचना नहीं चाहते आप लोगो को तो धन, मान और बच्चे चाहिये। साँसारिक वस्तुयें चाहिये। लेकिन यदि कोई मेरे जैसा आदमी इन दुखों से बचना चाहता है तो उसके लिये हुजूर दाता दयाल जी महाराज फरमाते हैं—

वह बच गया इस भव सागर से, सतगुरु ने जिसको तार दिया।

हुजूर दातादयाल जी महाराज फरमाते हैं कि सत्गुरु तार है। शास्त्र भी कहते हैं कि ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं और ज्ञान गुरू से मिलता है। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मुझे यह काम दिया था। मैंने अपने आपको समय का सत्गुरु कहा है और मैं किताबों में भी अपने आपको समय का सन्त सतगुरु लिख देता हूं। हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम वहुत कुछ लिखा और मेरे ग्रह भी ऐसे ही हैं। अब मैं सोचता हूं कि फकीर! क्या तू तर गया? यदि तू तर गया तो तू संसार को कैसे तार सकता है या सत्गुरु कैसे तारता है? यदि तुमने मुझे गुरु मान लिया है या दूसरे लोगों ने गुरु धारण किया हुआ है। क्या वे सचमुच भवसागर से तर गये? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊँगा और हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को वदल जाने की आज्ञा दी थी। इसलिये मैं आप लोगों से कहता हूं कि सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। एक आदमी बेशक मुझे या किसी भी महापुरुष को अपना गुरु धारण करले। जब तक वह गुरु की बात को समझकर उस पर अमल नहीं करेगा वह तर नहीं सकता और भवसागर के चक्कर मैं ही रहेगा। मुझे बहुत से आदमी गुरु मानते हैं यद्यपि मैंने १९४२ के बाद किसी को नाम नहीं दिया। बाहर जाता हूं। हजारों आदमी मुझको मिलते हैं। अपने निजी अनुभव के आधार पर कहता हूं कि मैं कैसे तरा और सत्गुरु कैसे तारता है? मैंने हुजूर दातादयाल जी महाराज की देह से बहुत प्रेम किया। जितना मैं प्रेम करता था उतना ही वह मुझे बावला और पागल कहा करते थे। मैं जब सोने का ताज, चांदी का हुक्का, जरीदार कपड़े और सिघाँसन लेकर उनकी आरती करने गया तो उस समय वह मुझे फरमाते हैं।

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई,

राह से कुराह भया, भूला भरमाना
कहाँ बढ़े कहां नते ठौर न ठिकाना ॥

तुम लोग अपने गुरुओं से प्रेम करते हो। उनके साथ प्रेम करने से, उनको कपड़े पहनाने से, सेवा करने से, उनको रुपये देने से यदि तुम यह आशा रखो कि तुम तर जाओगे तो यह गलत है, धोखा है और पूरा फरेब है। मैं जब उनकी आरती कर चुका और अपने जी में आये गीत बड़े प्रेम से आंखें बन्द किये हुए गारहा था तो उस समय उन्होंने यह शब्द लिख कर पाठी को पढ़ने के लिए दिया था। मैं तो इतना रुपया खर्च करके बड़े प्रेम से उनकी आरती करने गया और वह फरमाते हैं कि तू अभी भूला हुआ है और भ्रम में है। इसलिये कहता हूं कि जो लोग गुरु धारण करके गुरु के बाहर के प्रेम में ही सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं। वे भवसागर से पार नहीं जा सकते। भटनागर साहिब ! तुम मुझ से प्रेम करते हो और मन्दिर की आर्थिक सहायता भी करते हो। मैं तुमको सच्चाई और असलियत बता देना अपना कर्तव्य समझता हूं ! तुम मानो या न मानो। यह तुम्हारी इच्छा है और मैं उसका जिम्मेदार नहीं हूं। यह घटना जो मैंने वर्णन की है, १९२१ की है और यह दृश्य अब भी मेरे सामने है—

संगी नहिं साथी नहि कोई न सहाई।
ताक में हैं चोर डाकू कोई न सहाई।

इस संसार में हमारा कोई संगी या साथी नहीं। ये सब डाकू हैं। वे डाकू कौन हैं ? डाकू वे हैं जिनको हम अपना समझते हैं। स्त्री डाकू पुरुष डाकू। क्योंकि ये एक दूसरे की सूरत को अपनी ओर खींचते हैं। धन मान प्रतिष्ठा ये सब डाकू हैं क्योंकि ये तुमको अपनी ओर खींचते हैं। जब तक कोई किसी वस्तु की ओर खिचा हुआ है। उसका तो बाप भी भवसागर से पार नहीं जा सकता। सरसोंहेड़ी

वाले श्री कृष्ण ! सुन रहे हो ? तुम लोग मेरी सेवा करते नरायनदास है गोपालदास है। यह लेना देना प्रालब्ध कर्मानुसार होता है। मगर मैं क्योंकि समय के सन्त सतगुरु के रूप में इस संसार में प्रगट हुआ हूं। इसलिये सचाई बताना अपना कर्तव्य समझता हूं। कोई सुने या न सुने और अमल करे या न करे। मैं इसका जिम्मेदार नहीं।

सोया सो पूँजी खोया, पूंजी खोय रोया।
फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया ।।

हम लोग अपने स्वार्थ के लिये जो कुछ करते हैं या सोचते हैं। उसका संस्कार हमारे मस्तिष्क पर पड़ता है जब शरीर छूटता है तो जिस प्रकार के संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुए होते हैं। उनके अनुसार दूसरा जन्म मिलता है। जैसे इस लड़की (mary) और सुधीर का अब मेल हुआ है। यह इनके पहिले जन्म का कोई सम्बन्ध होगा। संस्कारों के अनुसार मेल होता है। संस्कार कभी व्यर्थ नही जाते। मैं अपनी बाबत जानता हूं कि मैंने अपने पेट के लिए रेल और तार विभाग में काम किया। मैं बहुत परिश्रम से काम करता था। मैं यह सोचता था कि यदि परिश्रम से काम करूँगा तो यहां बसरे बगदाद में कुछ समय अधिक काम करने का अवसर मिल जायेगा। क्योंकि यहां वेतन अच्छा मिलता था। बारह साल वहां रहा। वह जो उस समय का अधिक परिश्रम से अपने निजी स्वार्थ के लिये मैंने काम किया हुआ है उसके कारण अब तक भी रेल और तार मुझे स्वप्न में आजाती हैं। इस लिए यदि अपने निजी स्वार्थ के लिए या अपने लालच के लिए किसी से हेरा फेरी करोगे या धोखा और फरेब करोगे तो वे संस्कार कभी जायेंगे नहीं। उनका फल इस जन्म में या दूसरे जन्मों में अवश्य भोगना पड़ेगा। इससे न कोई सन्त और न कोई पीर बच सकता है। हमारे संस्कारों

के अनुसार हमको जन्म मिलेगा। यदि अच्छे हैं तो अच्छा और यदि बुरे हैं तो बुरा।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है विगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई न येगाना॥

यह हमारा देश नहीं है। यहाँ तो कोई पांच साल के लिये आया, कोई दस साल के लिये आया, कोई बीस साल के लिए और पचास साल या कोई सौ साल के लिये आया। आखिर यहाँ से हमको एक दिन चले जाना है। लेकिन हम इस देश को सत मान कर असलियत को भूल गये हैं और यहां फँस गये हैं।

गुरु ने उपदेश दिया, और तुझे चिताया।
सन्त पंथ धार हिये, कटे मोह माया॥

इसलिये होश करो! तुम भूले हुये हो। हुजूर दाता दयालजी महाराज का वह क्या उपदेश था? उन्होंने फरमाया था कि फकीर! तू सुरतरूप है। तू काल और माया में फँसा हुआ है। तेरा घर दयाल देश है। तुम वहां से आये हो और वहां जाओ। वहाँ जाने के लिये उन्होंने मुझे सुमिरन, ध्यान और भजन दिया। वहुत जपा। इससे खुशी मिली, आनन्द मिला और प्रसिद्ध होगया कि फकीरचन्द बड़ा भक्त है। मगर मैं आवागवन से न निकल सका। क्यों? क्या मैं गरीबी के कारण दुखी नहीं होता था? क्या किसी और सांसारिक कष्ट से मैं दुखी नहीं होता था? होता था। इसलिये मैं भवसागर से नहीं निकला था। कैसे निकला? मैं दुखी था। वाणियां पढ़ता था और अपने पूर्वजों का खण्डन पढ़कर मेरा मन बहुत दुखी होता था। देखना चाहता था कि असलियत क्या है। इसलिए १९१८ में हुजूर दाता दयालजीं महाराज ने मुझे असलियत का पता देने और इस भवसागर से निकलने के लिये यह काम दिया था और कहा था कि मेरी आज्ञा मानो तुमको सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के

रूप में मिलेगा । आज मिल गया । जब से मुझे पता लगा कि रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनके नाना प्रकार के काम कर जाता है । लेकिन मैं नहीं होता तो इससे मुझे असलियत का पता लग गया । इस बार मैं दिल्ली गया । एक आदमी जिसको मैं जानता भी नहीं था । वह मुझे दिल्ली से पन्दरह मील दूर अपने मकान में लेगया और बहुत धन खर्च किया । मैंने उससे कहा कि भाई ! तुम यहां क्यों लाये हो ? उसने कहा कि महाराज ! मैं आचरणहीन था । चार साल हुये आपका सत्संग सुना और मेरे बिचार बदल गये । अब आप हर समय मेरे साथ रहते हैं और मुझको कोई कठिनाई आती है तो आप मेरी सहायता करते हैं । अब मैं अपना काम ईमानदारी से करता हूं । मेरे सब बुरे कर्म छूट गये और मैं सुखी हूं ।

अब मैं सोचता हूं कि फकीर ! क्या तूने इसको कुछ दिया ? क्या तुम इसको जानते हो ? क्या तुम इसके साथ रहते हो ? नहीं । इसका अपना ही विश्वास और श्रद्धा इसके साथ रहती है और इसको (guide) करती है । इसलिये तो मैं किसी को नाम नहीं देता और नहीं किसी को अपना चेला बनाता हूं । लेकिन लोग मुझे गुरु मानते हैं । मेरे अनुभव में आया है कि नाम दिया नहीं जाता बल्कि नाम लिया जाता है । जो आदमी मेरी बात को समझ जाते हैं , उनके काम हो जाते हैं । कई आदमियों को मैंने अपनी जूठ भी दी, उनके सिर पर हाथ भी फेरा, लेकिन उनका कुछ नहीं बना । तो फिर क्या कहुँ ?

पहले दाता शिष्य भया, जो तन मन अरपा सीस ।
पीछे दाता गुरु भया, जो नाम दिया बखशीश ॥

जब तुम सत्संग में जाओ तो इतने ध्यान से सत्संग सुनो कि तुमको अपने शरीर की सुध न रहे । यह है तन देना । गुरु की

मुठ्ठी चापी करना, तन देना नहीं है यह तो ससार का व्यवहार है। जब तुम कोई (interesting) किताब पढ़ते हो तो जब तक तुम पढ़ते हो, तुमको अपने शरीर का कोई भान नहीं होता। ऐसे ही सत्संग में ध्यान देकर तन को स्वाभाविक ही भूल जाना, तन देना है। जब गुरू के चेहरे की ओर तुम्हारा ध्यान होगा और ध्यान से तुम उसके वचनों को सुनोगे तो तुम्हारा मन किसी दूसरी ओर नहीं जायेगा। यह है मन देना। भवसागर से बचने के लिये है सत्संग। सतसंग के बचनों से तुम शरीर और मन को भूल जाओगे। जब आदमी को यह विश्वास हो जाता है कि ये रूप रंग, भाव, विचार और शकलें जो कुछ भी मेरे अन्तर पैदा होते हैं। यह असलियत नही है। ये पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार और इस जन्म के सत्संगों के कारण केवल(suggestion and impression)हैं। तब भवसागर से बेड़ा पार होता है अन्यथा नहीं। सरसोंहेड़ी वाले तुम ! तुम्हारा सारा गांव मुझे गुरू मानता है। मेरा भी कोई कर्तव्य है। इसलिये मैं सचाई वर्णन करता हूं।

लूट पड़ी लूट से बचाले, धन अपना।
सह न काल कर्म चोट सोधले मन अपना ॥

वह कहते हैं कि ऐ फकीर ! तू चेत। संसार में लूट है। हर एक वस्तु मन्दिर, मसजिद, गिरजा और गुरु ये सब तुमको अपनी ओर खींचते हैं। इसलिये तू अपने मन को सोध। लेकिन मुझसे सोधा नहीं जाता था। इसलिये उन्होंने मुझे यह काम दिया था। अब आप लोगों के अनुभवों से बात समझ में आगई।

वो तर गया इस भवसागर से, सतगुरु ने जिसको तार दिया।

वह सतगुरु है, बाहर का गुरु। वह सच्ची बात बताकर और असलियत समझाकर तुमको तार देगा। वह असलियत क्या है ? कि यह हमारा देश नहीं। हमारी सुरत सतलोक से आके यहां

फँसी हुई है। सब फँसे हुए हैं। नाम का अधिकारी कोई नहीं। ये गुरु लोग जो नाम देते हैं। क्या ये तुम्हारे लिए नाम देते हैं ? ये तो अपने नाम के लिए कि मेरे इतने हजार या इतने लाख चेले हैं, इसलिये नाम देते हैं। लोगों के कल्याण के लिये नहीं देते। क्या मिला इनको नाम से ? सब संसार चक्कर में फँसे हुए हैं।

जिसे गुरु की संगत नहीं मिलीं, उसे काल करम ने मार दिया। आज कल तो जिसने दो किताबें पढ़ लीं, दाढ़ी बढ़ा ली और भगवें कपड़े पहन लिये, वह गुरु बन गया लेकिन गुरु कोई ही होता है। मैं जो सचाई बता रहा हूं क्या किसी ने आज तक बताई ? जिस प्रकार शिकारियों ने शिकार के लिए कुत्ते रखे हुये होते हैं ऐसे ही ये गुरु लोग यदि स्वयं नहीं कहते तो अपने चेलों से प्रोपेगण्डा करवाते हैं और लोगों को अपने जाल में फँसाते हैं। यह बिलकुल सचाई है। मगर सचाई सुनने के लिये कोई तैयार नहीं। मेरे पास बहुत से लोग आते हैं। क्या ये भवसागर से तरने के लिए आते हैं ? सब झूठ है। किसी के लड़का नहीं है, किसी का मुकदमा है, किसी का कारोबार नहीं है या किसी को कोई बीमारी है। सब सांसारिक धन धान्य, मान प्रतिष्ठा के लिये आते हैं। मैं बाहर दौरे पर था। हजारों आदमी मिले लेकिन परमार्थ के लिये कोई नहीं आया। यह मेरी भूल है जो मैं परमार्थ की बात करता हूं। संसार को परमार्थ नहीं चाहिये बल्कि संसार चाहिये। मैं चाहता हूं भवसागर से पार जाना। जिसने सतगुरु की संगत नहीं की और ज्ञान प्राप्त नहीं किया उसको काल और कर्म मार देता है। कैसे ? काल नाम है समय का। समय का परिवर्तन अर्थात परिस्थितियों के प्रभाव से आदमी बच नहीं सकता। कर्म ने कैसे मारा ? जो आदमी अज्ञान के कारण अपने निजी स्वार्थ के लिए काम करता है। उसका संस्कार उसके मस्तिष्क पर रहेगा और उसके अनुसार ही उसको दूसरा

जन्म मिलेगा। जिसको सतगुरु नहीं मिला और भेद और ज्ञान नहीं मिला। वह तो काल और कर्म के ही चक्कर में रहेगा। यह है काल और कर्म ने मारा। जिस प्रकार कि मुझे अब तक भी रेलगाड़ी स्वप्न में नहीं छोड़ती।

हुआ भाग उदय मेरा सजनी, मैं आ गया सतगुरु की शरनी।

मेरा भाग अच्छा है। मैं हुजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में पहुंच गया। मैं सचाई का इच्छुक था। यदि मान प्रतिष्ठा की इच्छा होती तो मैं भी परदा रखता लाखों का मालिक होता और तुम लोगों से सेवा कराता। लेकिन मेरी आत्मा नहीं मानी। यह नहीं कि मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं। मैं कुछ समय हुआ दौरे पर गया था तो क्या संसार को तारने गया था? बिलकुल नहीं। यह मेरा कर्तव्य था। कर्तव्य भी पूरा कर आया, सतसंग भी करा आया और मन्दिर के लिये चार पैसे भी ले आया। मैं भी बरी नहीं। यह मेरा खोटा कर्म था जो मैंने मानवता मन्दिर बनाया यह मेरे बस की बात नहीं। जो आदमी जिस वस्तू से घृणा करता है वह उसी में फँस जाता है। मैं डेरा बनाने से घृणा किया करता था इसलिये इसमें फँसा। क्योंकि घृणा का संस्कार मस्तिष्क में रहता है। इसलिये सन्त किसी को बुरा नहीं कहते। मुझे अपने विषय में याद है कि बसरे बगदाद में दो आदमी जो कि मेरे जानकार थे, शराब पीकर कई बार मेरे पास आकर बैठ जाते, मुझे इनसे शराब की दुर्गन्ध आती और मुझे उल्टी आ जाती। मैंने उनसे तंग आकर हुजूर दाता दयालजी महाराज से उनकी शिकायत की। उन्होंने मुझे लिखा कि क्योंकि तुम शराबियों से घृणा करते हो इसलिये तुमको शराबियों से वास्ता पड़ेगा। उस समय तो मैं समझ न सका। लेकिन बाद में एक शराबी A.S.M. बदल कर मेरे स्टेशन पर आगया। वह रेलवे की टिकटें बेचकर खागया। फिर पूछ ताछ

होती रही और मुकदमा चलता रहा। इसलिये किसी को बुर समझो अन्य था बुराई से तुमको वास्ता पड़ेगा।

तुम लोग सत्संग में आये हो। मैं सचाई वर्णन कर रहा हूं। यह मेरा कर्म है और मैं इसे भोग रहा हूं। लेकिन यह मुझे कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कह रहा हूं यही ठीक है। हो सकता है कि यह सारे का सारा गलत हो। मैं अपने घर जाना चाहता था। मैं चाहता हूं कि मन से ऊपर रहूं। मगर प्रालब्ध कर्म और मेरा शारीरिक कष्ट मुझको नीचे खींच लेते हैं। मैं जानता हूं कि मैं ऊँचा बोल रहा हूं। हर एक आदमी इसको समझ नहीं सकता। मगर यह मेरे वस की बात नहीं है। जो आदमी जिस अवस्था में होता है वह उसी अवस्था की बात करता है और यदि सच पूछो तो तुम लोग इस शिक्षा के अधिकारी भी नहीं हो। देखो ! ज्ञान की गंगा बह रही है। वह किसी को बुलाती नहीं। उसका काम तो बहना है। वे लोग भाग्यशाली हैं जो इसमें नहा लेते हैं या हाथ मुँह धो लेते हैं या कम से कम छींटे ही ले लेते हैं या यदि और कुछ नहीं तो किनारे पर Seceno·y देख कर ही आनन्द लेते हैं। सत्संग की महिमा है। मगर ऐसे सत्संग की कदर कौन करता है। तुम लोग तो कदर वहां करते हो जहाँ छेंने और ढोलक बजते हों।

सतसंग के बचन अमोल सुनाकर, सत के सार का सार दिया।

गुरु ने क्या किया ? सतसंग में अपने बचनों द्वारा सार का सार बता दिया। सत का सार क्या है ? अपने आप से पूछता हूं कि क्या तुमको सत का सार मिल गया ? हाँ मिल गया। सत है असली तत्व, जिससे संसार बनता है। जिस प्रकार मिट्टी पानी से, पानी वायु से, वायु आग से और आग आकाश से बनती है और इन सबका तत्व आकाश है ऐसे ही जिस वस्तु से यह सारी वस्तुयें बनती हैं वह सार है और सत का सार वह है, जो इस तत्व को

देखता है, जानता और पहिचानता है और साक्षी है। वह है शब्द और उसका अंश प्रकाश है। जो वस्तु प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह है सत का सार। हुजूर दाता दयालजी महाराज का क्या भाव है ? मुझे नहीं पता। मैंने जो समझा है वह कहता हूं कि सत का सार मैं हूं, तुम हो। हर एक आदमी वही है। उसी को अकाल पुरुष, परमतत्व या अनामी कहा गया है।

माया का जाल बहुत भारी, जो फँस गया हो रहा संसारी।
शुभ अशुभ कर्म के बदले में, यमराज ने कारागार दिया।

माया क्या है ? "म" के अर्थ भावना और "य" के अर्थ अन्त्र। जिस वस्तु से किसी वस्तु को जाना जाता है या मापा जाता है वह है माया। वह माया क्या है ? हमारी बुद्धी में अभी तक माया से निकला तो नहीं। मगर इसके रूप को जान गया हूं और समझ मुझको आप लोगों की दया से आई है। जो आदमी अपने विचारों, भावों और संकल्पों को सत मानकर इनमें फँसा हुआ है, वह संसारी है। संसार है सम और सार। हम सब सार हैं और हमारे सामने जो बिचार, संकल्प और शकलें आती हैं चाहे वे खुली आंख से आते हैं या बन्द आंख से आते हैं और चाहे वे मन में आते हैं वह सारे का सारा संसार है। जो बाबे फकीर के रूप को अपने अन्तर बनाकर उसमें फँसा वह भी संसारी है। जो राम, कृष्ण या किसी और गुरु के रूप को अन्तर में बना कर उसमें फँसा वह भी संसारी है। जो धन धान्य, मान प्रतिष्ठा या बाल बच्चों में फँसा वह भी संसारी है। लेकिन जब तक जीवन है कौन निकाल सकता है ? यह काल और माया का देश है। इस देश में रहते हुए इसके बिना निर्वाह नहीं इसके रूप को समझकर इसमें न फँसना ही सत ज्ञान है। संसार में सारे काम करो, मगर इनमें फँसो नहीं। रात को यहाँ जो विवाह हो रहा था। उस समय आपने सारा खेल देखा।

मैंने अपना पार्ट किया मगर मैं किसी वस्तु में फँसता नहीं। जब जीवन है, हम माया को छोड़ नही सकते। जब साधन करके माया से ऊपर चले जाओगे तब माया छूट जायेगी। मगर हर समय तो तुम वहां रह नहीं सकते। इसलिये सतगुरु से ज्ञान लेकर पहले अपना संसार अच्छा बनाओ। प्रेम प्यार, नेकी और परोपकार का संसार बनाओ। मगर उसमें फँसो नहीं। यह जीवन युक्त अवस्था है। मैं संसार में रहता हूं। तुम लोगों से मिलता हूं। सत्संग कराता हूं और सारे काम करता हूं तो क्या मैं संसार से बाहर हूं? नहीं, कोई भी संसार से बाहर नहीं। मैं संसार के रूप को समझ गया। भूके पेट के लिये जो मैंने रेलवे में नौकरी की उसमें जो फँस गया था तभी तो आज तक स्वप्न में रेल और तार मेरा पीछा नहीं छोड़ते। मगर अब जो काम मैं करता हूं मन्दिर बनाया और सत्संग कराता हूं, मैं उसमें फँसता नहीं इसलिये मानवता मन्दिर या कोई और आदमी मेरे स्वप्न में नहीं आता। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने जब मुझे नाम दिया था तो कहा था कि अपने सम्बन्धियों से कह दो कि तुम्हारा धन धान्य उनके लिये है, मगर तुम उनके लिये नहीं हो। उस समय तो इस ज्ञान की समझ नहीं आती थी। मगर अब सत्संगियो से इस बात की समझ आई है। समझते हो भटनागर। क्या होगया यदि तुम्हारे लड़के ने अमरीका में विवाह कर लिया तो। कर्म का लेना देना है। हर एक जीव अपना कर्म भोगता है। कौन किसी का बेटा और कौन किसी का बाप। मगर जो संसार के नियम को तोड़ता है वह बागी कहलाता है। इस काल और माया के देश में यदि हम इसके नियम को तोड़ेंगे तो हम दोषी होंगे। सब काम करो मगर फँसो नहीं। अपना कर्तव्य समझ के करो। यदि गुरु ज्ञान नहीं मिला हुआ है तो मन पर अच्छे या बुरे जो संस्कार पड़े हुए हैं इसके फल से तुम बच नहीं सकते।

न सन्त न फकीर। न ऋषि न मुनि न अमीर और न गरीब, कोई भी बच नहीं सकता। हां ! संस्कार कट जाते हैं। कैसे ? मानलो कि एक आदमी ने कोई पाप किया। लेकिन फिर वह नेकी की ओर चला गया। इससे यह हो सकता है कि उसको उस बुरे कर्म का फल स्वप्न में मिल जाये और वह जाग्रत में उसके फल से बच जाये। स्वप्न में डर लगता है, सांप काट जाता है और कई प्रकार के कष्ट होते हैं। यह बुरे कर्म का फल है। स्वप्न में तुम बादशाह बन जाते हो, धनी बन जाते हो। क्यों ? तुमने कोई अच्छा काम किया। लेकिन फिर बुराई की ओर आगये तो वह जो तुम्हारा अच्छा कर्म था उसका फल तुमको स्वप्न में मिल गया। इसलिए कर्म के फल से कोई बच नहीं सकता। अभ्यास में भी बहुत से संस्कार कट जाते हैं। यदि सत्संग मिला हुआ है और बात समझ में आगई है और तुम उस पर अमल करते हो तो सूली का कांटा बन सकता है कैसे ? मैं गरीब था। बाल बच्चे थे। मैं सोचा करता था कि मैं इनको कैसे पढ़ाऊँगा और कैसे इनके विवाह करूँगा। मेरा एक लड़का मर गया और एक लड़की मर गई। मुझे कोई दुख नहीं हुआ। यह है सूली का कांटा। लेकिन एक तरह से हुआ भी। कैसे ? बच्चों के मर जाने से मेरी स्त्री दो साल तक रोती रही। मैं जब घर में आता तो स्त्री को रोती देख कर मुझे दुख होता था। यह कर्म भोग है। कर्म के फल से मैं भी न बच सका और न कोई और ही बच सका और नहीं कोई बच सकता है।

तुम लोग अभ्यास करने बैठते हो, लेकिन मन ठहरता नहीं। कहीं का कहीं दौड़ता है। वे जो मस्तिष्क पर संस्कार पड़े हुए हैं वह तुमको घसीट कर उस ओर ले जाते हैं। हुजूर बाबा दयालजी महाराज ने कर्म के फल के बारे में एक शब्द लिखा है—

सब भोगें बारम्बार, अवश्य फल कर्म किये का।
यह सोच समझ चित धार, मरम जग जगत जिये का॥
सुर नर देवी देव महर्षि ओर ब्रह्म अवतार।
अशुभ कर्म के फल से, इनको मिले नहीं छुटकार॥
एक जो कहिये राम महा प्रभु, परसोत्तम मर्यादा।
गुप्त घाट सरजू जल बूढ़े, रामायण सम्बादा॥

रामचन्द्र जी अवतार थे। संसार से उदासी आगई ओर सरजू में जाके डूब मरे। क्या पाप किया था उन्होंने? सुनो! अपने आपको मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने के लिए गर्भवती और निर्दोष सीता को एक धोबी के कहने पर देश से निकाल दिया यथार्थ जब सीता को लंका से वापिस लाये थे तो उसको अग्नि प्रवेश करके उसकी परीक्षा ली गई थी। राम भी कर्म के फल से बच न सके। अब तुम लोग अपनी ओर देखो। घरों में पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को, सास बहू को बाप बेटे को और बेटा बाप को बिना कारण तँग करते हैं। आज कल की शिक्षा ही ऐसी है। यह संसार शोक स्थान है।

दूजे कहिये कृष्ण विवेकी, सोलह कला के पूरे।
यदुकुल नाश भील की गांसी, भये मान मद चूरे॥

कृष्ण जी ने महाभारत युद्ध कराया। क्या फल पाया? उनका अपना सारा परिवार आपस में लड़ कर मर गया। कहते हैं कि कृष्णजी रामचन्द्र के अवतार थे। रामचन्द्र जी ने बाली को मारा था और वाली ने भील बन कर कृष्ण जी को मारा। तो कृष्णजी भी कर्म के फल से बच न सके। इसलिये तुम लोग जब सतसंग में आते हो तो कुछ प्राप्त करने के लिये आया करो, तमाशा समझ के मत आया करो।

तीजे युधिष्ठिर धर्मराज की, अकथ अपार कहानी ।
भाई भारजा संग गले सो, हिम सब कोई जानी ।।

महाभारत में बहुत लोग मारे गये पाण्डु राज किस पर करते ? चारों ओर से की आवाज रोने और हाहाकार सुनाई देता था । इसलिये पांण्डु उदास होकर मरने के लिये पहाड़ों को चले गये और शरीर त्याग दिये ।

चौथे वशिष्ट महा मुनि ज्ञानी, देखा कुल का नासा ।
विश्वामित्र के हाथ पलट गया, ज्ञान योग का पासा ।।

विश्वामित्र वशिष्ठ से कहते थे कि मुझे ब्रह्मर्षि कहो लेकिन वह नहीं कहते थे । इसलिये विश्वामित्र ने वशिष्ठ के लड़के को मार दिया ।

पंचम दशरथ अवध नरेशा, श्रवण आर्य को मारा ।
पुत्र वियोग प्राण को त्यागा, मिला न राम सहारा ।।
छटे इन्द्र की करनी समझो, श्राप वृहस्पति दीन्हा ।
भगमय देवराज की काया, करम का फल यह लीना ।
चन्द्र कलंकित काम वेग से, जाने सब संसारा ।
करम अटल है महावली है, कोई कोई करे विचारा ।
रावण वाली भरत जड़ ज्ञानी, ऋषि के सुत दुर्वासा ।
करम किया वैसा फल पाया, अन्त में भये उदासा ।।

तुम लोगों ने जड़ भरत की कहानी सुनी होगी । राजपाट को छोड़ कर जंगल में तपस्या करने लगा । हिरनी के एक बच्चे को पाला । जब बच्चा बड़ा होगया तो भाग गया । क्योंकि जड़ भरत को हिरन के बच्चे से मोह था तो जब वह मरा तो उसको हिरन की योनी मिली । मेरे पास इसका कोई प्रमाण तो हैं नहीं और यदि है तो भी मैं किसी को प्रत्यक्ष वर्णन नहीं कर सकता । लेकिन यदि यह बात ठीक है कि जड़ भरत को हिरन की योनी मिली तो यदि

तुम अपने अन्तिम समय पर अपने बच्चोंके मोह में फँसे रहोगे ... जड़ भरत की तरह दूसरे जन्म से बच नहीं सकोगे। लड़के लड़कियाँ पोते और दोहते तुमको संसार से निकलने नहीं देंगे। यदि गुरू की देह से प्रेम करते हो और उसको बाबा फकीर समझते हो तो तुमको वहां जन्म मिलेगा जहां बाबा फकीर जायेगा। अब क्या पता मैं कहां जाऊँगा। इसलिये मैं संसार को धोखा देना नहीं चाहता। तभी तो मैं कहा करता हूं कि बाबा फकीर गुरु नहीं है। बाबे फकीर की बाणी गुरु है—

बाणी गुरु गुरु है बाणी, बाणी अमृत सारे।

इस स्पष्ट वर्णन से मुझको गुरु बनने का कोई पाप नहीं है। मैं बिना गुरु बने ही संसार को सीधा मार्ग बता चला और गुरू का काम कर चला;

सुन प्रसंग चित अपना साधो, सोधो मन कर्म बानी।
शब्द योग कर जन्म बनाओ, राधास्वामी की सहतानी॥

सत्संग के वचनों को समझो और अपने मन के विचारों को ठीक रखने का यत्न करो और शब्द योग करो।

वह बच गया इस भवसागर से, सतगुरु ने जिसको तार दिया।
जिसे गुरु की सगत नहीं मिली, उसे काल करम ने मार दिया॥

सत्गुरु नहीं तारता। सत्गुरु की बाणी तारती है। कैसे? सत्गुरु बाणी कहती है। जो उसको समझकर उस पर अमल करता है वह तर जाता है। जैसे मैं समझा। अब समझ आगई कि अन्तर में जो कुछ भी प्रकट होता है वह सब माया है तो अब मेरा साधन क्या है? प्रकाश और शब्द, बल्कि उससे भी परे जिसको तुम समझ नहीं सकते।

हुआ भाग उदय मेरा सजनी, मैं आगया सतगुरु की सरनी।
सतगुरु के वचन अमोल सुनाकर, तत्व के सार का सार दिया॥

जो आदमी केवल अभ्यास ही करते हैं और किसी पूर्णपुरुष का सतसंग नहीं सुनते। उनको अभ्यास से पूरा लाभ नहीं होता। इसलिये बाहर के गुरु का सतसंग और नाम दोनों आवश्यक हैं।

माया का जाल बहुत भारी, जो फँस गया हो वही संसारी।
शुभ अशुभ करम के बदले में, यमराज ने कारागार दिया ।।

अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा फल मिलता है। इस अच्छाई और बुराई दोनों से निकलने का क्या उपाय है? सबसे पहले सतसंग में जाके बात को समझो और बुराई को छोड़ कर नेकी और परोपकार की ओर आओ। जब उसको भी समझ जाओगे तो फिर परोपकार को भी छोड़ दो और अपनी ड्यूटी या अपना कर्तव्य समझ कर दूसरों की सहायता करो। अच्छा और बुरा समय सब पर आता है। जब हम कष्ट में होते हैं तो चाहते हैं कि कोई हमारी सहायता करे। ऐसे ही हमारा भी कर्तव्य है कि हम दूसरों की सहायता करें।

त्रयताप महा है दुखदाई, मुक्ति मिलनी है कठिनाई।
जो भरमा भूला जग में उसके. सर पर दुख का भार दिया।

भूला और भरमा वह है जिसको असलियत का पता नहीं। इस कारागार से पूरा गुरु निकालता है। मैं इस संसार में समय के सन्त सतगुरु के रूप में प्रकट हुआ हूं। मुझे कोई सुरखाब का पर नहीं लग गया, न मैं कोई जादूगर हूं और न किसी को फूँक मार सकता हूं। मैं सच्ची समझ और सच्चा विवेक दे सकता हूं बाकी तुम्हारी अपनी करनी है। तुम्हारी करनी, तुम्हारी श्रद्धा और तुम्हारे विश्वास का ही फल तुमको मिलता है। यह मैं अपने आपको भी कह रहा हूं कि फकीर! क्या पता तेरा क्या परिणाम हो। इसलिये अपने जन्म को बनाले। नथा कसम दे दम्या मगर अपनी नीयत से सच्चे होकर अपना जीवन बनाने का यत्न करो। असफलता भी

होती रहती है। मैं अब भी गिरता रहता हूं। मगर फिर र जाता हूं। क्योंकि ज्ञान मिला हुआ है। कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं ज ता। यह सब भूल है। भूल जाओ कि बाहर से कोई गुरु किसी के अन्तर जाता है। यह सब पाखण्ड है।

जब धर्म की हानि होती है तो ब्रह्म का अबतार इस सँसार में आता है जन अज्ञान अन्धेरा छा जाता है तो सन्त का अवतार इस संसार में आता है और शिक्षा को साफ कर जाता है। मैं अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहता हूं। देखो ! एक वात याद रखो। एक डाक्टर किसी खास बीमारी का माहिर है सम्भव है वह आप उस बीमारी में फँस जाये। मगर उसका नुसखा तो ठीक है। इस वास्ते गुरु की बात को समझ कर उस पर अमल करो और अपना जन्म बनाओ। यह मत देखो कि उसका वेतन क्या है। इसके बच्चे कितने हैं। मैं फरीदकोट स्टेशन पर था। वहां मेरे पास दो आदमी आये और कहने लगे कि हमको नाम दीजिये। नाम तो मैं देता नहीं था। लेकिन मैंने उनको वैठने को कहा और यह भी कहा कि पांच स:त मिनट में मैं यह काम समाप्त करके फिर मैं तुमसे वात करता हूं। वे वैठ गये। दो मिनट के बाद एक ने प्रश्न किया कि आपके कितने बच्चे हैं। मैं चुप रहा। पांच मिनट के बाद दूसरे ने कहा कि आपको वेतन कितना मिलता है। मैंने कहा कि तुम यहां डाका मारने आये हो ? मैंने दोनों को बाहर निकाल दिया गुरु से केवल सतज्ञान लो। शेष बातों को छोड़ दो। मैंने हुजूर दाता दयालजी महाराज के बारे में कभी यह नहीं सोचा था कि उनके बच्चे कितने हैं या यह क्या काम करते हैं।

राधास्वामी परम सन्त आये, निज दया से मुझको अपनाये।
हियें में थी दर्बा प्रेम अग्नि, कृपा से उसे उद्गार दिया ॥

यदि मैं यह कह दूँ कि मैं राधास्वामी दयाल हूं या मैं कबीर

हूं तो यह गलत नहीं है। जो सार शिक्षा देगये इसी को फिर से कह रहा हूं। अन्तर केवल इतना ही है कि उन्होंने सेन बेन किया और मैंने साफ कर दिया।

देखो ! देखो ! कई बार सब कुछ जानता हुआ भी मैं भूल जाता हूं। मगर फिर समझ आ जाती है। Toear is humen भूल सब करते हैं। यदि गिर जाते हो तो उत्साह करो और उठो। बच्चा गिरते ही सम्भलता है। रात को सोते समय अपने दिन भर के किये हुये काम पर विचार करो। यदि ऐसा करना आरम्भ कर दोगे तो तुमको अपनी गलतियों का पता लगेगा और तुम उनको ठीक करने का यत्न करोगे। सच्ची बात तो यह है कि सन्तमत की शिक्षा का हर एक आदमी अधिकारी नहीं हैं। जिनको जीवन में काफी अनुभव हो चुका हो और वे इस चक्कर से बचना चाहते हों उनके लिये नाम दान है। जो अधिकारी नहीं हैं वे यदि नाम जपेंगे तो नाम उनको खा जायेगा। जो आदमी किसी वस्तु का अधिकारी नहीं है वह इस वस्तु की कदर भी नहीं करता। साधारण संसार के लिए वेद मार्ग है। बच्चो को पहले बढ़ने दो। बुद्धि से बढ़ें, विचार से बढ़ें और शिक्षा से बढ़ें। जब अनुभव हो जायेगा तो फिर संसार की नाशवानता उनके सामने आयेगी। तब उनको होश आयेगा। यदि प्रारम्भ में ही उनको परमार्थ की शिक्षा दोगे तो उनके जीवन बिगड़ जायेंगे। नाम का अधिकारी कौन है ?

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आशा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे ॥

लोग नाम तो ले लेते हैं फिर कहते हैं कि पुत्र नहीं और धन नहीं। हर एक वस्तु का समय होता है। एक बच्चा तुरन्त दादा नहीं बन सकता। जवान बनेगा, विवाह करायेगा, फिर उसके लड़का होगा। वह जवान होगा। उसका विवाह होगा। जब उसके

बच्चा होगा तब कहीं जाकर वह दादा बन पायेगा। हर एक के लिये समय चाहिये। और यह नाम हर एक आदमी के लिये भी नहीं। अज्ञानी के लिये ज्ञान है, बीमार के लिये दवाई है और वह इस संसार से दुखी है। उसके लिये नाम है और प्रकृति उसको इस ओर आने का अवसर देता है।

भटनागर! तुम लोग आये हो। तुम्हारे लड़के का विवाह होगया। ये लड़के और लड़कों के प्रालब्ध कर्म के अनुसार इस जन्म में इनका मेल हुआ है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि तुमको खाने को भोजन, पहिनने को कपड़ा, रहने को मकान और मन को शान्ति मिले। शेष रह गया परमार्थ।

नानक कोटन में कोऊ, नारायण जिन चीत।

प्रार्थना

ले०—स्व० श्री देवीचरन 'मीतल'

मैं कौन हूं और क्या हूं, मैं जानता नहीं।
क्यों आया यहाँ, जाना कहां, इस का पता नहीं॥
दुनियाँ के झंझटों में, पिसता रहा सदा।
गो देखता हूं रात दिन, रहना नहीं यहां॥
फिर भी हविस है भारी, जाती नहीं यह 'मीतल'।
बस तेरा लिया सहारा, तेरी शरण गही।

—o—

बस यही है आरजू, गुरुदेव मेरी तुमसे।
करनी करालो मुझसे, तुझे जचती हो सही॥
रात दिन सोचा किया, करता रहा यतन।
अन्त में समझा यही, अपने वश में कुछ नहीं॥

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

१—मनीआर्डर भेजते समय ग्राहक महोदय ग्राहक नं० तथा पुराना पता लिखना भूल जाते हैं और नये नाम और नये पते से भेज देते हैं जिससे रुपया ठीक-ठीक जमा होने में कठिनाई होती है इसलिये ग्राहक नं व पुराना नाम लिखना न भूलें और पता साफ-साफ लिखा करें ताकि आगे गलती न हो।

२—कुछ लोगों की शिकायत है कि हमको "मनुष्य बनो" पत्रिका नहीं मिलती। हमारे यहां से तो पूरी तरह देखभाल करके हर महीने भेजी जाती है मगर डाक विभाग की गड़बड़ी के लिये हमारे पास कोई इलाज नहीं है। अगर किसी महीने का कोई अंक न मिले तो हमको लिख दें हम दुबारा भेज देंगे। या अपना पता बदलवा लें और डाक खाने में लिखकर शिकायत भेज दें।

३-४ महीने बाद लिखना कि हमकी अंक नहीं मिला और ७-८ महीने पहिले के अंक मँगवाना उचित नहीं है।

३—इस वर्ष ११ महीने हो चुके अभी तक बहुत से ग्राहकों का पिछले वर्षो तक का चन्दा नहीं आया है। बहुत से ग्राहकों ने तो बार-बार लिखने पर भी पिछला चन्दा नहीं भेजा। वह चन्दा मारा गया इस प्रकार पत्रिका को हानि उठानी पड़ी है। कृपया जिन्होंने अभी तक चन्दा नहीं भेजा है वे शीघ्र भेज दें।

पुस्तकें मंगाने वालों के लिये

यह ध्यान रखना जरूरी है कि यदि वे पुस्तकों का मूल्य पेशगी भेजें तो रजिस्ट्री का डाक खर्च भी साथ ही भेज दें। थोड़े मूल्य की पुस्तको के वी० पी० से भेजने में खर्चा अधिक होता है। विना रजिस्ट्री के पुस्तकें नहीं भेजी जातीं।

सुधा मीतल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

ीर की जीवनी	२)५०
प्रकाश भाग १	)७५
प्रकाश भाग २	
ाम कृत)	
उर्फ जीवन रहस्य	१)
ार भाग १ व २	५)
ा रहस्य	२)२
ठ वक्त	१)
ी भाग १, २, ३	३)
	)५०
की व्याख्या	२)५०
द योग	१)
परे	१)
अपार के परे	१)२५
ान	१)२५
मक खोज	१)२५
मा	१)
ा	)७५
ुरुष	१)
सचाई और शान्ति	१)
त	१)२५
की व्याख्या	१)५०
न दाता भाग १ व २	२)
न	१)
की खोज	१)
कास	१)
	१)
	)७५
प्ति	)३०
अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १ व २	३)
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २, ३, ४, ५	६)
अद्भुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२५
मानवता युग धर्म	)८०
आकाशी रचना	)५०
आजादी की कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावली	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव बिवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)७५

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

Regd. No. L-ALG–28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक व प्रकाशक—

देवीचरन मीतल

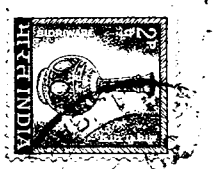

लेखराज नगर,

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, A

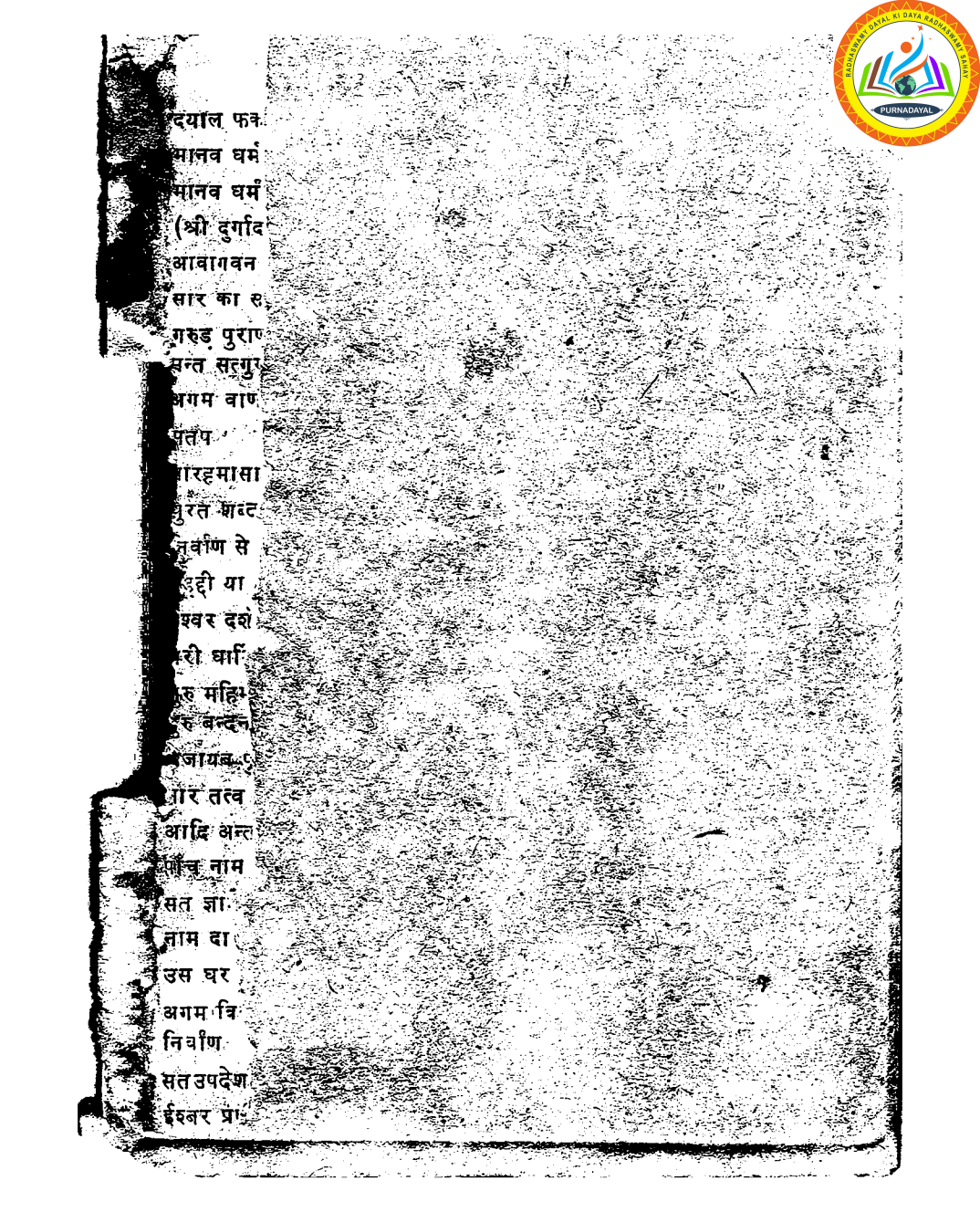

दयाल फ
मानव धर्म
मानव धर्म
(श्री दुर्गाद
आवागवन
सार का स
गरुड़ पुराण
सन्त सतगुर
अगम वाण
प्रताप
बारहमासा
सुरत शब्द
निर्वाण से
हद्दी या
ईश्वर दर्श
री धार्मि
गुरु महिम
गुरु वन्दन
जायब
सार तत्व
आदि अन्त
पाँच नाम
सत ज्ञा
नाम दा
उस घर
अगम त्रि
निर्वाण
सत उपदेश
ईश्वर प्रा